जनवरी 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा
नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

PARLE
चुप्पक्क चक्क
चं...नकचक्क
चिश्श द्वीश नक?
गोली
मस्त
बोली
mango bite
अपने मुंह में रखिए मैंगोबाइट की एक गोली,
और शुरू कीजिए बोलना मैंगोबाइट की बोली.
mango
bite
Visit: www.parleproducts.com

विशेष आकर्षण

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट
या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

संरक्षित रखो : सुरक्षित रखो

जीवन बहुमूल्य माना जाता है, चाहे वह मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का अथवा वनस्पति और प्रकृति के किसी अन्य रूप का भी क्यों न हो। सभी जीने के लिए पैदा होते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि मनुष्य कभी-कभी अपने बन्धुओं को, धरती के अन्य प्राणियों तथा प्रकृति को भी नष्ट करने में सुख का अनुभव करता है। हमें नसीहत दी जाती है कि हिंसा का त्याग करें, पशु जीवन को विलुप्त करनेवाली क्रियाओं से बचें तथा प्रकृति प्रदत्त संपदा को नष्ट करने में सुख अनुभव न करें।

सृष्टि में एक और बर्ग भी है जिसे संरक्षित और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। हमारा तात्पर्य कीर्तिस्तम्भों, स्मारकों तथा अन्य प्रकार के निर्माणों से है। मुख्यतः इनकी उत्पत्ति मनुष्य की कल्पना और भावना से होती है और प्रायः ये मानव उपलब्धियों के प्रति कीर्तिगान अथवा श्रद्धांजलि होते हैं।

सौ साल पहले हमारे देश में विदेशी शासन था। लेकिन हमें स्वीकार करना होगा कि हमारी परंपरा के प्रति उनमें आदर भाव था। सन् १९०४ में सभी कीर्तिस्तम्भों तथा स्मारकों को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए एक कानून बनाया गया। गनीमत है कि स्वतंत्रता के पश्चात सरकार तथा कुछ संस्थाओं द्वारा किये गये उपायों से भावी पीढ़ियों के लाभ के लिए इनमें से अधिकांश स्मारक अच्छी अवस्था में हैं।

आयें, इस अधिवर्ष में मिले एक अतिरिक्त दिवस को अपनी परंपरा के प्रतीकों को संरक्षित तथा सुरक्षित रखने की आवश्यकता के संदेश को प्रसारित करने के लिए बचा कर रखें।

सम्पादक : *विश्वम*

A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE.

- Games, puzzles, riddles, stories, colouring activity and more...

- Good habits grow when young. Check out articles and features in which values are taught subtly and let your child learn about Indian culture and heritage.

PAGE AFTER PAGE WILL KINDLE YOUR CHILD'S IMAGINATION

Mail the form below along with the remittance to : Subscription division, Chandamama India Limited, 82 Defence Officers' Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

SUBSCRIPTION FORM

Please enrol me as a subscriber of Junior Chandamama. I give below the required particulars:

Name : .... Address : ....

....

....

PIN Code : ....

I am remitting the amount of Rs.120/- for 12 issues by Money Order/Demand Draft/ Cheque No...................... on...................................... Bank .... branch drawn in favour of Chandamama India Ltd., encashable at Chennai (outstation cheque to include Rs.25/- towards Bank Commission).

Place : ....

Date : ....

Signature

पुस्तक से प्रेरणा

पुस्तकों से तुम्हें आमोद और आनन्द मिलता है और ढेर सारी सूचनाएँ भी। लेकिन प्रेरणा? यहाँ एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे एक पुस्तक से ऐसी प्रेरणा मिली कि जीवन भर उसने उसके विचारों और कर्मों को आकार दिया।

किशोरावस्था में पुस्तकों को पढ़ना उसे अच्छा लगता था। कुछ पुस्तकों का उस पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। उनमें एक पुस्तक थी - जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी। और पुस्तक की आरंभिक पंक्तियाँ उसके मन में स्पष्ट रूप से सदा के लिए अंकित हो गईं। उन पंक्तियों में लिखा था कि यदि मनुष्य की दासता 'पाप' नहीं है तो फिर कुछ भी पाप नहीं है। उस तरुण ने इस पर गहराई से बहुत समय तक विचार किया। यह उसकी प्रिय पुस्तक बन गई।

एक दिन स्कूल से लौटकर उसने देखा कि उसके पिता उसकी प्रिय और अमूल्य पुस्तक पर सिर रखकर सो रहे हैं। यह देखकर वह अशान्त हो गया। निश्चय ही सिर के नीचे पुस्तक का स्थान नहीं है। उसने थोड़ी देर के लिए सोचा कि पिता की नींद को भंग किये बिना कैसे वह पुस्तक को निकाल सकता है। तब उसने धीरे से पिता का सिर उठाकर अपनी गोद में रखा और पुस्तक हटा ली। पिता की नींद खुलने तक वह शान्त बैठा रहा। पिता को बेटे की गोद में अपना सिर देखकर आश्चर्य हुआ।

उसने अपने बेटे से पूछा कि क्या हुआ था। बेटे से उसकी प्रिय पुस्तक के बारे में उसने बड़े ध्यान और अचरज के साथ सुना। उसने गर्व के साथ महसूस किया कि उसके बेटे का ज्ञान उसकी उम्र से कहीं अधिक है। उसने उसे अपने हृदय से लगाकर कहा, ''तुम निश्चय ही बड़े होकर महान पुरुष बनोगे। अपने देश को दासता से मुक्त करोगे।''

पिता का बचन सच निकला। वह तरुण बड़ा होकर एक सबल और सुयोग्य नेता बना। वह दृढ़ संकल्प के साथ अपने सिद्धान्तों पर अटल रहा। वह एक शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति बना। वह बालक अब्राहम लिंकन था। उसे, कई महान कार्यों के लिए आज भी याद किया जाता है। उनमें सबसे महत्वपूर्ण था दासता के विरुद्ध कानून। संसार उसे दीर्घकाल तक स्मरण करता रहेगा।

स्वार्थी का बड़प्पन

भानुमति को धनी होने का बड़ा गर्व था। इसी गर्व के कारण उसने अपनी ननद की सहायता करने से भी इनकार कर दिया। व्यापार में नुक़सान की वजह से ननद के परिवार की आर्थिक स्थिति बड़ी ही ख़राब थी। वह विजयवाडा के पास के किसी और गाँव में रहती थी।

हाल ही में उसका पति मर गया, इसलिए उस बेचारी की सहायता करनेवाला कोई नहीं था। वह अपनी इकलौती बेटी अरुणा के साथ बड़ी ही दीन स्थिति में ज़िन्दगी गुज़ारने लगी थी। भानुमति उसे देखने गयी थी, पर उसने किसी भी प्रकार की सहायता का वादा नहीं किया और घर लौट आई थी।

परंतु इस बार भानुमति को सोलह साल की उसकी ननद की बेटी अरुणा को अपने साथ ले जाना ही पड़ा, क्योंकि उसकी माँ की भी मृत्यु हो गयी और उसका एकमात्र सहारा छिन गया। कर्मकांड पूरा हो जाने के बाद जब भानुमति अपना गाँव लौटने लगी तब गाँव के तीन प्रमुखों ने उससे कहा, ''देखो भानुमति, अपनी ननद की बेटी को अपने यहाँ, अपने साथ न ले जाने की भूल मत करना। यह कदापि मत भूलना कि वह तुम्हारी ननद की इकलौती बेटी है। उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी तुम पर है। तुमने अगर ऐसा नहीं किया तो तुम्हारी जग-हँसाई होगी।'' जब प्रमुखों ने खुलकर यह बात कह दी तो भानुमति को उसे अपने साथ ले जाना ही पड़ा। पर, मन ही मन उसने सोच लिया कि वह उससे घर का पूरा काम करवायेगी।

दूसरे ही दिन भानुमति ने घर का काम अरुणा के सुपुर्द कर दिया। इस पर अरुणा को दुख ज़रूर हुआ, पर बेचारी कर भी क्या सकती थी। वह चुपचाप घर के काम करने लगी।

उस घर में कुल मिलाकर पाँच लोग रहते थे।

- कृष्णराव -

उसके इकलौते बेटे सूरज के साथ और लोग जो रहते थे, वे थे, भानुमति का सगा भाई पद्मनाथ और उसकी दो बेटियाँ। पूरा गाँव कहता है कि पद्मनाथ की बेटी मालती, सूरज की होनेवाली पत्नी है।

सूरज अच्छे स्वभाव का था, अक़्लमंद लगता था। पर, घर में होनेवाले काम-काजों से उसका कोई संबंध नहीं था। उसकी कोई बात नहीं चलती थी। पूरी जिम्मेदारी पद्मनाथ ने ही अपने कंधों पर ले रखी थी। खेतों में कौन-सी फसल हो, धान किस दाम पर किसको बेचना चाहिए आदि का निर्णय लेने का अधिकार उसी को थे। इसलिए, किसान और व्यापारी उसी से बात करते थे और उसी के निर्णय को अमल में लाते थे।

घर के अलंकरण से लेकर, त्योहारों के अवसरों पर पकाये जानेवाले पकवानों तक का निर्णय उसकी बड़ी बेटी मालती लेती थी।

''जब से तुम्हारे मामा मर गये, तब से लेकर मेरे भाई ही सब कुछ संभालते आ रहे हैं। मालती न हो तो यह घर चलेगा ही नहीं,'' भानुमति गर्व के साथ अरुणा से कभी-कभी कहा करती थी।

एक दिन सूरज ने पद्मनाथ से कहा, ''इस साल धान के बदले अरहर, मूँग, उड़द की फ़सल उगायेंगे। शहर से आया मेरा एक दोस्त कह रहा था कि उनकी वहाँ काफ़ी मांग है।'' उसकी ये बातें अरुणा ने भी सुन लीं।

दूसरे ही क्षण रूखे स्वर में पद्मनाथ ने कहा, ''यह तो बेवकूफ़ी होगी। सब लोग यही फसल

उपजाएँ तो हमें फ़ायदा थोड़े ही होगा? इसलिए धान ही उपजायेंगे।''

''किन्तु मामाजी, आसपास के खेतों में धान ही उपजता है। उनके खेतों में अरहर, मूंग और उड़द की फसल अच्छी नहीं होती। उनके खेत इसके अनुकूल नहीं हैं। इसलिए अधिकाधिक किसान धान ही उगायेंगे।'' सूरज ने कहा।

''देखो, तुम्हारी बातों में निरी मूर्खता है। शहर से उर्वरक लेकर लोग पत्थरों से भरी ज़मीन में भी सोना उगा रहे हैं। किसी भी हालत में हम यह बेवकूफ़ी नहीं करेंगे और धान ही उपजायेंगे,'' सूरज का विरोध करते हुए पद्मनाथ ने कहा।

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता,'' कहते हुए सूरज कुछ और कहने ही वाला था कि भानुमति ने उसकी बातों को काटते हुए कहा, ''देखो

सूरज, मामा बड़े हैं, अनुभवी हैं, उनकी बात मानो। उनके विरोध में बोलने की आदत से बचो।'' फिर उसने अपने भाई से कहा, ''भैय्या, सूरज छोटा है, उसका अनुभव नहीं के बराबर है। जैसा ठीक समझते हो, करो। उसकी बातों का बुरा न मानना।''

इन बातों को सुनते हुए अरुणा ने सूरज की ओर देखा। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था। उसी समय मालती को भी उसने देखा जो मंद-मंद मुस्कुरा रही थी। ''वर्तमान परिस्थितियों में मेरा यहाँ कोई मूल्य नहीं है। घर का मालिक होते हुए भी सूरज का भी यहाँ कोई मूल्य नहीं है। मेरी स्थिति से भी बढ़कर उसकी स्थिति बड़ी ही दीन है।'' अरुणा ने मन ही मन सोचा।

इसके एक महीने के बाद देवी के नवरात्रि उत्सव मनाये जानेवाले थे। गाँव के प्रमुख व्यक्ति अपनी-अपनी तरफ़ से हर दिन किसी एक कार्यक्रम का प्रबंध करते थे और यह लंबे अर्से से चली आ रही प्रथा थी।

भोजन कर चुकने के बाद जब सब लोग आराम से बैठे हुए थे तब पद्मनाथ ने कहा, ''हर साल हमारी तरफ़ से जो भागवत पठन करते हैं, सुना है, उनकी तबीयत ठीक नहीं है। किसी और को बुलवाना पड़ेगा।''

सूरज ने बड़े ही उत्साह के साथ कहा, ''मामाजी, अच्छा ही हुआ। किसी और को बुलाने की ज़रूरत नहीं। इस बार भागवत पठन न हो। गाँव का धनी किसान राम तो भागवत पठन का कार्यक्रम तय करेगा ही। नटराज नाटक समिति के आदमियों से मेरा परिचय है। उनसे बात करके महिषासुर मर्दन नाटक का आयोजन करेंगे। गाँववालों को भी यह कार्यक्रम नया लगेगा और हमें भी अच्छा नाम मिलेगा।''

पद्मनाथ ने तुरंत कहा, ''पता नहीं, कब तुम अक़्ल से काम लोगे। खर्च की बात ताक़ में रखो, अगर कोई हमसे पूछे कि देवी नवरात्रियों में नाटक कैसा, तो हम उन्हें क्या जवाब देंगे? हमारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी।''

हर छोटी बात पर भी पद्मनाथ अपना बडप्पन दिखाता था और सूरज को नीचा दिखाता था, जो अरुणा को बिलकुल पसंद नहीं आया।

परंतु इस घटना के घटने के ठीक सातवें दिन नटराज नाटक समिति से एक व्यक्ति आया और

गाँव के प्रमुखों से मिला। उसने उन प्रमुखों से बताया कि हमने यहाँ महिषासुर मर्दन नाटक को निःशुल्क प्रदर्शित करने का निश्चय किया है। उस व्यक्ति ने प्रमुखों से इसके लिए अनुमति माँगी। प्रमुख उस व्यक्ति से प्रस्ताव के बहुत संतुष्ट हुए और अनुमति दे दी, क्योंकि उन्होंने भी समझा कि नये प्रकार का यह मनोरंजन सबको पसंद आयेगा।

सूरज को भी इस बात पर खुशी हुई कि उसकी इच्छा पूरी होगी, चाहे उसकी इच्छा मामा पद्मनाभ से भले ही ठुकरायी गयी हो। पूर्णिमा के दिन नाटक प्रदर्शित हुआ और सभी ग्रामीणों को बहुत पसंद आया।

प्रदर्शन के बाद नाटक समिति का अध्यक्ष मंच पर खड़ा होकर कहने लगा ''आप सबको यह नाटक बहुत पसंद आया, इसके लिए हम आपके आभारी हैं। पर एक बात आपको बता देना चाहता हूँ। बिना कोई रक़म लिये हमने नाटक प्रदर्शित करने का जो निश्चय लिया, वह सच नहीं है। इसके लिए बाला त्रिपुर सुंदरी के साथ-साथ आप सबको हमें माफ़ करना होगा। चार दिनों पहले एक युवक हमसे मिलने आया था। नाटक प्रदर्शन के लिए हमने जो रक़म माँगी, वह रक़म उसने हमें दे दी। हम यह नहीं जानते कि इसके पीछे क्या कारण है। वह युवक नहीं चाहता था कि हम किसी भी हालत में उसका नाम किसी को बतायें। फिर भी, आपसे जो प्रशंसा मिली, जो आदर मिला, वह हमारे लिए मुख्य है। इसलिए उस युवक का नाम बताये बिना चुप नहीं रह सकते। उस युवक का नाम है, सूरज।'' नाटक

समिति के अध्यक्ष का यह कथन सुनकर सूरज चकित रह गया।

घर लौटते हुए वह सोचने लगा कि इसके पीछे किसका हाथ हो सकता है। तभी ग्रामीणों ने उसे घेर लिया और कहने लगे ''सूरज, हमने कभी सोचा तक नहीं था कि तुम ऐसा कर पाओगे। आख़िर छिपे रुस्तम निकले। अब तक हम यही समझ रहे थे कि अपने मामा की आड़ में छिपे नादान बालक हो। पर अब पता चल गया कि तुम कितने व्यवहार कुशल हो।''

दूसरे दिन अरुणा, सूरज से एकांत में मिली और कहा, ''जो हुआ उसपर तुम्हें बड़ा आश्चर्य हुआ होगा न? मैं ही इस घटना के पीछे हूँ। इसके लिए मुझे माफ़ करना। हमारा ग्रामाधिकारी हमारा निकट का रिश्तेदार है। मरने के पहले मेरी माँ ने छोटी रक़म उसके सुपुर्द की थी। मैंने ही हमारे कुली नारायण को उसके पास भेजा और सविस्तार उसने सारी बातें बतायीं। तब ग्रामाधिकारी ने नारायण से बताया, ''इस काम के लिए मैं खुद अपना धन खर्च करूँगा। अरुणा थोड़ी ही मेरे लिए कोई परायी है।'' फिर उसने ही इसका पूरा इंतज़ाम किया। सूरज के नाम पर जो युवक नाटकवालों से मिलने गया, वह उसीका बेटा है। मुझे लगा कि अपने मामा पद्मनाभ का सामना करने का साहस तुममें नहीं है, इसीलिए मैंने यह काम किया। अब ही सही, निर्णय खुद लो और उन्हें अमल में लाओ। उस स्वार्थी के बड़प्पन से बाहर निकलने पर सोचो।''

सूरज ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अरुणा, इन देवी नवरात्रियों में जो किया गया है, वह एक और प्रकार का महिषासुर मर्दन है। इस क्षण से लेकर घर और खेत को लेकर जो भी निर्णय लिये जायेंगे, वे मेरे निर्णय होंगे। साथ ही मैंने एक और मुख्य निर्णय लिया है।''

''मुख्य निर्णय? क्या है वह?'' अरुणा ने पूछा। ''मैंने निर्णय लिया है कि जीवन भर तुम मेरी मंत्रिणी बनी रहोगी। तुम्हारी ही सलाह का पालन करूँगा।'' सूरज ने कहा।

अरुणा ताड़ गयी कि इसके पीछे क्या रहस्य है। मुस्कुराती हुई उसने सिर झुका लिया।

भल्लूक मांत्रिक

3

(जंगल के गाँवों में बसनेवाली प्रजा को लुटेरों तथा डाकुओं के हमलों से मुक्त करनेवाले कालीवर्मा को पड़ोसी राजा से डरकर राजा जितकेतु ने मृत्यु दण्ड सुनाया। जब उसका शिरच्छेद किया जा रहा था, तब बधिक से परसु खींचकर कालीवर्मा ने अश्वदल के नेता का सर काट डाला। तभी ''आदि भल्लूक !'' की पुकार उसे सुनाई दी। उसके बाद...)

'आदि भल्लूक !' की पुकार सुनते ही सारे घुड़ सवारियों ने सर घुमाकर उस आवाज़ की दिशा में देखा। कालीवर्मा घोड़े पर से नीचे कूद पड़ा। उसने इसके पूर्व अश्वदल के नेता के हाथ अपनी जो तलवार दी थी, उसे लेकर म्यान में रख ली। इतने में एक पहाड़ी जलप्रपात के पीछे से एक दीर्घकाय व्यक्ति सामने आया।

''यह कोई मांत्रिक होगा !'' यों विचार करके कालीवर्मा ने सोचा कि उसे वहाँ से भाग जाना चाहिए। फिर उसे संदेह हुआ कि ऐसा करने पर घुड़ सवार उसे रोकेंगे। तब उनके चेहरों की ओर परखकर देखने लगा। घुड़ सवार सब भय और संभ्रम के साथ जल प्रपात की ओर ताक रहे थे।

जलप्रपात के पीछे से पुकारनेवाला व्यक्ति अब घुटने भर गहरे पानी की धारा को पारकर किनारे पर आया। वह देखने में बलिष्ठ लगता

था। और काले भालू का चमड़ा धारण किये हुए था। हाथ में दण्ड था। जिसकी मूठ पर हीरे में खुदा भालू का सिर चकाचौंध कर रहा था।

कालीवर्मा तब तक भागने की सोच रहा था, पर अपनी ओर बढ़नेवाले उस विचित्र पोशाकवाले को देख वह चकित हो जड़वत खड़ा रह गया। घुड़ सवार दल और भैंसे पर सवार बधिक भी भयकंपित हो रहे थे।

भालू का चमड़ा धारण किया हुआ व्यक्ति उनके समीप आकर बोला, ''मैं जानता हूँ कि वक़्त पर अगर मैंने आदि भल्लूक का नाम न लिया होता तो और ज़्यादा खून-ख़राबी हुई होती! जानते हो? मेरा नाम भल्लूक मांत्रिक है !''

पल-दो पल तक सब लोग मौन रह गये। कालीवर्मा ने दायें हाथ से तलवार और बायें हाथ में बधिक का परसु उठाकर उच्च स्वर में भल्लूक मांत्रिक से बोला, ''महाशय ! तुमने बिना पूछे अपना नाम बता दिया। यह तो बड़ा अच्छा हुआ। मगर अब रही तुम्हारे कथनानुसार खून-खराबी के बंद होने की बात! सावधानी से सुन लो, अब कोई भी मेरे रास्ते को रोकने की ज़ुर्रत करेगा तो थोड़े और सर कटकर नीचे गिरनेवाले हैं !'' ये शब्द कहते कालीवर्मा ने घोड़े को हांक दिया।

''हे युवक ! तुम बड़े ही हिम्मतवर हो ! पल भर रुक तो जाओ !'' यों कहकर भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्र दण्ड से भैंसे पर जड़वत बैठे बधिक को चुभो दिया। तब पूछा, ''अबे, नक़ाब ओढ़े तुम इस सिरस वन के पिशाच हो या राजा के प्रधान बधिक हो?''

''हुज़ूर ! मैं पिशाच नहीं हूँ, राजा का प्रधान बधिक हूँ। वे जिन्हें सजा देते हैं, उनके सर काटना मेरा काम है।'' बधिक ने जवाब दिया। साथ ही मांत्रिक का भेष देख भागने की कोशिश करनेवाले भैंसे की गर्दन सहलाने लगा।

उस वक़्त भल्लूक मांत्रिक अश्वदल के नेता की लाश को इतमीनान से निहारते हुए बोला, ''तब तो शिरच्छेद के दण्ड से बचकर, एक राजसेवक का सर काट करके भाग जाने की सोचनेवाले एक अपराधी के साथ तुम कैसा व्यवहार करने जा रहे हो?''

''हुज़ूर ! मैं बेहथियार हूँ। मेरे परसु को अपराधी कालीवर्मा ने ज़बर्दस्ती छीन लिया है।'' बधिक ने भर्राये हुए स्वर में उत्तर दिया।

कालीवर्मा ने भांप लिया कि यह मांत्रिक बधिक और घुड़ सवारों को मेरे विरुद्ध उकसा रहे हैं। यों विचार कर परसु को बधिक की ओर बढ़ाकर कालीबर्मा बोला, ''अरे नकाबवाले पिशाच ! लो, तुम्हारा यह परसु ! अगर तुम में हिम्मत है तो कोशिश करके देखो, कहीं तुम मेरे रास्ते को रोक सकते हो?''

दूसरे ही क्षण बधिक ने अपने नक़ाब को उतारकर दूर फेंका और लड़खड़ाते स्वर में बोला, ''कालीवर्मा, तुम महान योद्धा हो ! मैं सिरस वन के भैरव की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा घमण्ड उतर गया है।''

कालीबर्मा घुड़ सवारों से बोला, ''बताओ, तुम लोगों का क्या निर्णय है? तुम लोगों ने अपने सरदार की हालत देख ली है न?''

''शिरच्छेद का दण्ड अमल करनेवालों में से एक मर गया तो दूसरे ने हथियार डाल दी। हम यह ख़बर राजा को देंगे। लेकिन रास्ता रोककर जान गँवानेवाले मूर्ख हम नहीं है।'' घुड़ सवार एक स्वर में बोले।

''तुम लोगों ने सही बात बताई।'' ये शब्द कहकर कालीबर्मा ने घोड़े को हांक दिया।

तभी भल्लूक मांत्रिक कालीवर्मा के घोड़े की लगाम थामकर चिल्ला उठा, ''भल्लूक पाद गुरु ! आख़िर हमें जैसे व्यक्ति की ज़रूरत थी, वह मिल गया है।'' फिर कालीबर्मा से बोला, ''कालीवर्मा ! लगता है, तुम यह वास्तविक बात तक भूल गये हो कि यहाँ पर लोक प्रसिद्ध महान मंत्र वेत्ता भल्लूक मांत्रिक भी हाज़िर हैं।''
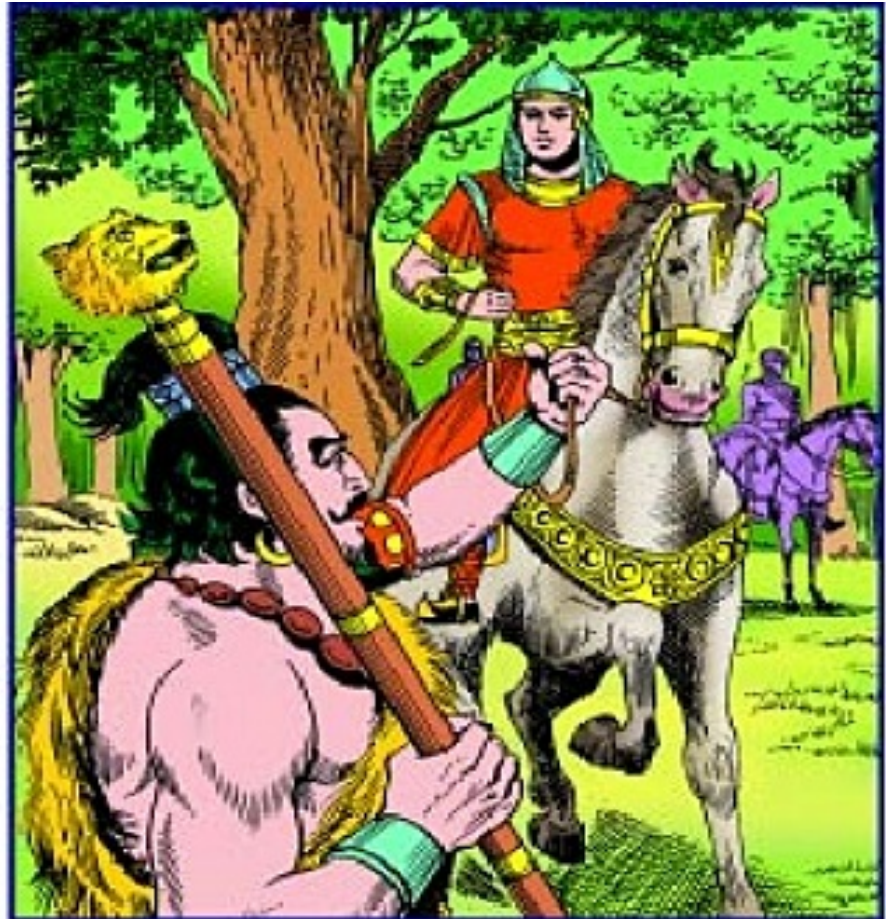
कालीबर्मा का बचपन से ही मांत्रिक, ओझा, वग़ैरह के प्रति जरा भी आदर का भाव न था। ऐसे कई लोगों को उसने अपने गाँव और अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में देख लिया था।

अब भल्लूक मांत्रिक की बातें सुनने पर कालीवर्मा ने सोचा कि यह मांत्रिक उसका अनादर कर रहा है, तब वह क्रोध में आकर बोला, ''ओह, महाशय ! क्या आप का नाम भल्लूक मांत्रिक है? वैसे आपका नाम सुनते ही डर लगने लगता है। आपने इसके पहले एक और भल्लूक का नाम लिया था। वे कौन हैं? मुझे जैसे साधारण व्यक्ति के लिए कौन भल्लूक क्या होता है? इसकी याद रखना भी मुश्किल है।''

कालीवर्मा ने भल्लूक मांत्रिक के नाम का मज़ाक उड़ाया, फिर भी भल्लूक मांत्रिक नाराज़

नहीं हुआ, उल्टे मुस्कुराते हुए बोला, "मेरे गुरुजी का नाम भल्लूक पाद है। मेरा नाम भल्लूक मांत्रिक है। आगे होनेवाले अद्‍भुत कार्यों को देखकर ख़ुश होनेवाले तुम इन नामों के बीच की इस छोटी सी समानता पर नाहक़ घबराओ मत।"

"घर से निकलने के बाद जिन मुसीबतों का सामना मुझे करना पड़ा, उन्हें देख मैं एक दम ऊब गया हूँ। अब मैं जल्दी जल्दी अपने गाँव पहुँचकर खेतीबाड़ी करके उसी से संतुष्ट होना चाहता हूँ।"

यों कहते कालीवर्मा ने परसु को बधिक की ओर फेंक दिया और लापरवाही से घोड़े पर एड़ लगाई।

घोड़ा हिल उठा, दस-बारह क़दम चलकर अब दौड़ लगाने को था, तभी भल्लूक मांत्रिक ऊँचे स्वर में बोला, "कालीवर्मा, रुक जाओ! तुमने देखा भी है कि तुम्हारे सामने से आनेवाले लोग कौन हैं?"

यह चेतावनी पाकर कालीवर्मा ने सर उठाकर आगे की ओर देखा। एक विशाल सिरस वृक्ष के पीछे से तीन घुड़ सवार तेजी के साथ आ रहे थे। उनके बीच का व्यक्ति रेशमी वस्त्र और बड़ी पगड़ी पहने हुए था। उसके अगल-बगल में दो कवचधारी थे जिनके हाथों में तलवारें थीं और कंधों पर चमकनेवाले ढाल थे।

उन्हें देखते ही कालीवर्मा ने घोड़े को रोक दिया। कवचधारी घुड़ सवारों के बीच रेशमी वस्त्र पहना हुआ व्यक्ति हाथ उठाकर कालीवर्मा को इशारा करते हुए बधिक से बोला, "अबे नगर के प्रधान बधिक! महाराजा ने इस अपराधी को शिरच्छेद का दण्ड दिया है, पर तुमने अब तक उस पर अमल क्यों नहीं किया?"

बधिक थर-थर काँपते भैंसे पर से उतर पड़ा और सोच ही रहा था कि क्या जवाब दे, तभी भल्लूक मांत्रिक बधिक से सवाल करनेवाले व्यक्ति के समीप पहुँचा और पूछा, "तुम्हीं हो न महाराजा जितकेतु के प्रधान मंत्री जीवगुप्त?"

मंत्री जीवगुप्त ने सोचा कि राजा तथा उसके प्रति भी आदरसूचक शब्दों का प्रयोग न करके अशिष्ट ढंग से सवाल करनेवाला यह व्यक्ति कोई कपटी बैरागी होगा। मंत्री ने आँखें लाल-लाल करके क्रोधपूर्ण शब्दों में कहा, "सिपाहियो, पहले इसे लात मारकर दूर फेंक दो।"

मंत्री का आदेश पाकर मंत्री के बगल में स्थित

घुड़सवार तलवार खींचने को हुए, पर भल्लूक मांत्रिक के हाथ में मंत्र दण्ड को देख भयभीत हो गये। घोड़े हिनहिनाते हुए पीछे हट गये।

"सरकार! उस बैरागी के हाथ के मंत्र दण्ड की मूठ में अंकित भालू का सर देखिए! अभी दाढ़ फैलाये अपनी आँखों से अग्नि कण बिखेर दिया था।" घुड़सवारों ने जवाब दिया।

जीवगुप्त ने भल्लूक मांत्रिक के मंत्र दण्ड के भालू के सर को निरखकर परिहासपूर्ण हँसी से पूछा, "अबे बैरागी, तुम्हारी बातों और चेष्टाओं को देखने से तुम एक घमण्डी मालूम होते हो! क्या तुमने मंत्र-तंत्र या जादू-टोना सीख लिया है?"

मंत्री की बातें सुन भल्लूक मांत्रिक ने आँखें तरेरते हुए उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि प्रसारित कर कहा, "कहावत है - संन्यासी सिद्ध होने पर बैरागी बन जाता है, और इसी तरह गिरगिट अपना रंग बदलता है? पर मैं न संन्यासी हूँ और न बैरागी हूँ - मैं भल्लूक मांत्रिक हूँ। जय! आदि भल्लूक की!" चिल्लाकर भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्रदण्ड से पास के एक ठूँठ पर ज़ोर से दे मारा।

तत्क्षण ठूँठ से अग्नि कण छितर आये और दूसरे ही क्षण धक् धक् करते सारा वृक्ष जल गया। मंत्री जीवदत्त का घोड़ा भड़क उठा और हिनहिनाते दौड़ पड़ा। मंत्री के कवचधारी अंगरक्षक भय कंपित हो मंत्री के समीप अपने घोड़ों को दौड़ाया।

पल-दो पल तक सभी लोग चकित हो मौन रह गये। दूर से यह सारा दृश्य देखनेवाला कालीबर्मा घोड़े को हांककर भल्लूक मांत्रिक के समीप पहुँचा, घोड़े से उतरकर बोला, "ओह! तुम साधारण मायावी मांत्रिक नहीं हो! महान मंत्रवेत्ता हो! कपटी व दुष्ट मंत्री को तुमने जैसे घबड़ा दिया, वैसे इसके राजा को भी अपनी मंत्र शक्ति के द्वारा भय कंपित करके उसे सही ढंग से शासन करने के लिए बाध्य क्यों नहीं करते?"

"शाबाश युवक! तुम न केवल हिम्मतवर हो, बल्कि बुद्धिमान भी हो! मेरे मन की बात तुमने ताड़ ली!" इन शब्दों के साथ कालीबर्मा की तारीफ़ की। तब मंत्री से पूछा, "मंत्री, तुमने मेरी शक्ति का परिचय पाया! अब बताओ, यहाँ पर इन लोगों को आदेश देनेवाले कौन हो सकते हैं? तुम या मैं?"

इस पर मंत्री कंपित स्वर में बोला, "महाशय

भल्लूक मांत्रिक ! मैंने तुम्हारी शक्तियों को अपनी आँखों से देख लिया है ! आप सिर्फ़ यहीं पर नहीं, बल्कि राजमहल में महाराजा जितकेतु को भी आदेश और सलाह दे सकते हैं !''

भल्लूक मांत्रिक बधिक से बोला, ''अबे, सुनो ! सर काटनेवाले तुम कटे हुए सिरों को धड़ से जोड़कर सीने की तरकीब भी जानते होगे ! तुम इसी वक़्त घुड़सवार दल के नेता के सर को धड़ से सीकर घोड़े पर बिठा दो और उसे रस्सों से बांध दो !''

बधिक ने पल भर में अपना काम पूरा किया और घुड़सवार दल के नेता की लाश को घोड़े पर बिठाकर रस्सों से बांध दिया। मगर जल्दबाजी में उसने चेहरे को पीठ की ओर रखकर सी दिया था, इस कारण ऐसा लगता था कि घोड़े पर घुमा हुआ सिरवाला कलेबर सवार है।

इस भूल को देख मंत्री जीवगुप्त को छोड़ भल्लूक मांत्रिक के साथ सभी लोग ठहाके लगाकर हँस पड़े। भल्लूक मांत्रिक ने जीवगुप्त की ओर क्रोध भरी दृष्टि डालकर आदेश दिया, ''हे मंत्री ! तुम अब बधिक के बाहन भैंसे पर और तुम्हारे बाहन पर बधिक सवार होने जा रहे हैं !''

जीवगुप्त चुपचाप थर थर कांपते भैंसे पर सवार हो बैठ गया। इसी प्रकार बधिक मंत्री के घोड़े पर सवार हुआ और उसने अपने हाथ लगाम थाम ली। इस पर भल्लूक मांत्रिक ने सबको नगर की ओर चलने का आदेश दिया।

राजा जितकेतु के मंत्री के साथ हुई इस बेइज़्ज़ती पर प्रसन्न हो कालीबर्मा ने कहा, ''इस जुलूस को देख नगर की जनता ज़रूर ख़ुश होगी। अब मैं अपने गाँव चला जाता हूँ।''
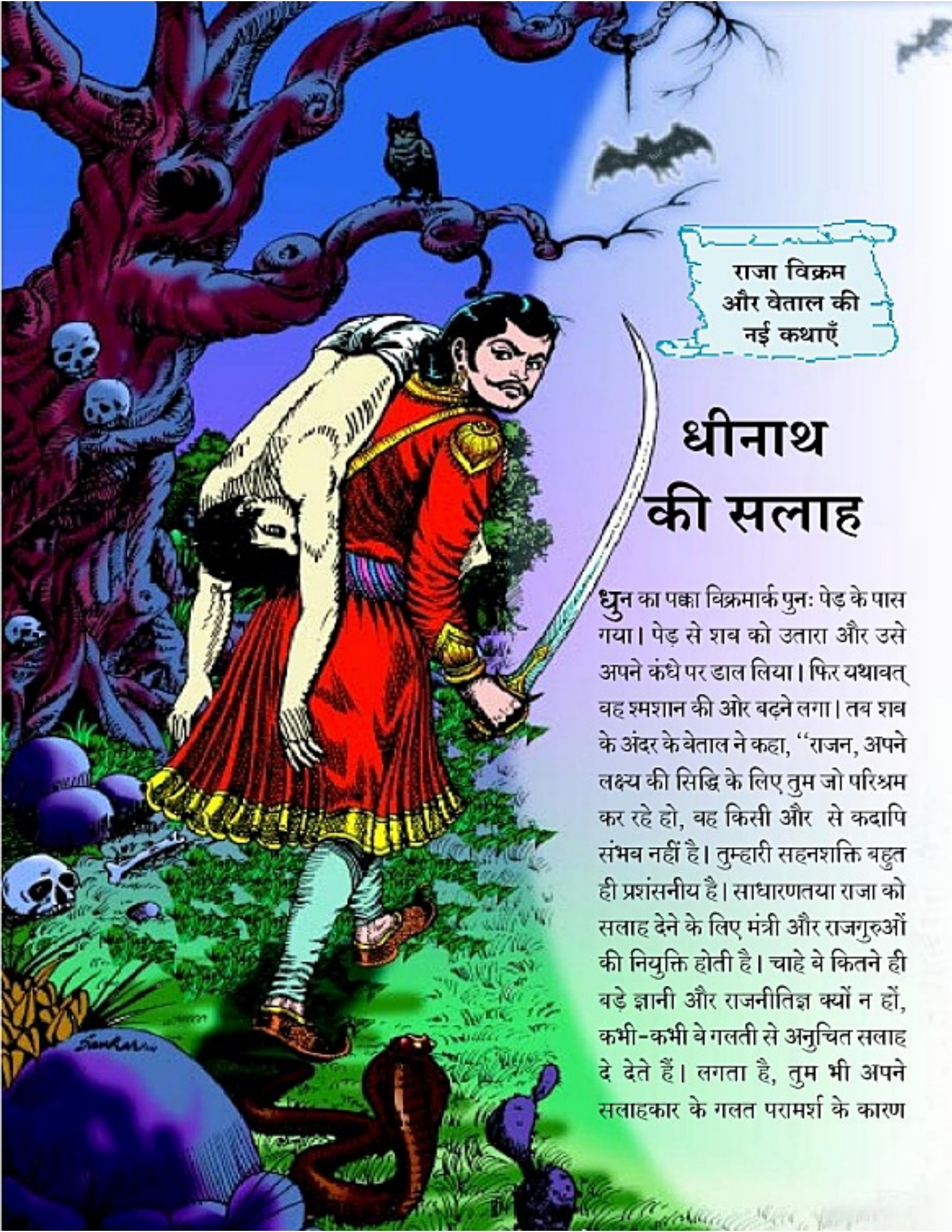
यों कहकर अपने घोड़े पर सवार हो कालीवर्मा जाने को हुआ, तब भल्लूक मांत्रिक मंत्र दण्ड उठाकर बोला, ''कालीवर्मा, क्या तुमने मेरा आदेश नहीं सुना?''

''आदेश ! कैसा आदेश? यहाँ पर मुझे कौन आदेश देनेवाला है?'' इन शब्दों के साथ कालीवर्मा ने म्यान से तलवार निकाल ली।

(क्रमशः)

राजा विक्रम और बेताल की नई कथाएँ

धीनाथ की सलाह

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन, अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए तुम जो परिश्रम कर रहे हो, वह किसी और से कदापि संभव नहीं है। तुम्हारी सहनशक्ति बहुत ही प्रशंसनीय है। साधारणतया राजा को सलाह देने के लिए मंत्री और राजगुरुओं की नियुक्ति होती है। चाहे वे कितने ही बड़े ज्ञानी और राजनीतिज्ञ क्यों न हों, कभी-कभी वे गलती से अनुचित सलाह दे देते हैं। लगता है, तुम भी अपने सलाहकार के गलत परामर्श के कारण

इतने कष्ट झेल रहे हो। उदाहरण के लिए एक ग्रामाधिकारी के सलाहकार धीनाथ नामक पंडित की कहानी सुनाता हूँ,'' कहकर वह कहानी यों सुनाने लगा :

श्रीपुर के ग्रामाधिकारी श्रीनाथ की यह प्रबल इच्छा थी कि उसका गाँव सभी गाँवों में सर्वश्रेष्ठ हो। अपनी इच्छा को कार्य-रूप देने के लिए उसने धीनाथ नामक एक पंडित को अपना सलाहकार बनाया। वह किसी बात को तर्क की कसौटी पर कसकर सत्य के प्रमाणित होने पर ही कोई निर्णय लेता था और उसी के अनुसार ग्रामाधिकारी को सलाह दिया करता था।

उस गाँव का निवासी त्रिमूर्ति पचास साल का था। इस ढलती उम्र में वह किसी गंभीर रोग का शिकार हो गया। कमाई न होने के कारण त्रिमूर्ति का बेटा त्रिकाम गाँव में भीख माँगने लगा। एक बार जब वह धीनाथ के घर भीख माँगने गया तो धीनाथ ने उससे कहा, ''तुम्हारी उम्र ज्यादा से ज्यादा बीस होगी। तुम हट्टे-कट्टे जवान हो। अब तक तुम्हारे पिता मेहनत करते थे और उनकी कमाई पर तुम पलते रहे। अब जब बीमार होकर तुम्हारे पिता अशक्त हो गये तब दूसरों की मेहनत पर जीना चाहते हो। भिक्षा माँगना अपराध है। यह तुम्हारी पहली ग़लती है, इसलिए मैं तुम्हें दंड देना नहीं चाहता। फिर कभी भीख माँगते हुए दिखायी दोगे तो तुम्हें जेल भिजवाऊँगा।''

धीनाथ की इस चेतावनी ने त्रिकाम को भयभीत कर दिया। वह गाँव छोड़कर भाग गया। इस वजह से उसका बाप त्रिमूर्ति अनाथ हो गया। इस स्थिति में धीनाथ ने ग्रामाधिकारी से कहा, ''गाँव के अनाथों और विकलांगों की देखभाल करना ग्रामाधिकारी की जिम्मेदारी है। आप त्रिमूर्ति की सेवा-शुश्रूषा के लिए किसी एक आदमी को नियुक्त कीजिए। ऐसी व्यवस्था कीजिए, जिसके अनुसार हर रोज़ गाँव का एक आदमी उसकी सेवा में लगा रहे, उसकी ज़रूरतों को पूरा करे।'' ग्रामाधिकारी को धीनाथ ने यों सलाह दी।

ग्रामाधिकारी, धीनाथ की इस सलाह पर नाराज़ तो अवश्य हुआ, पर उसे प्रकट न करते हुए उसने कहा, ''मुझे लगता है कि आपने सलाह देने में देर कर दी। जब उसका बेटा यहाँ था, तभी कोई प्रबंध करने की सलाह देते तो अच्छा होता। उसकी जगह पर किसी और को काम

पर लगाने की नौबत न आती। समझ लीजिए, ग्रामीण त्रिमूर्ति के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेंगे तो क्या यह त्रिमूर्ति का भिक्षाटन नहीं कहलायेगा? आपने तो यह सलाह देकर मुझे पशोपेश में डाल दिया।''

''त्रिकाम अनाथ नहीं है। वह विकलांग भी नहीं है। वह सुस्त है। सुस्तों का भिक्षाटन अपराध है। त्रिमूर्ति भिक्षाटन नहीं कर रहा है। उसके पूछे बगैर ही हम उसकी सहायता करने जा रहे हैं,'' धीनाथ ने अपना तर्क पेश की।

श्रीनाथ को भी धीनाथ का यह तर्क सही लगा। उसने तुरंत इसका प्रबंध किया। श्रीपुर गाँव में चंद दुष्ट थे। वे हमेशा किसी मौके की ताक़ में रहते थे। वे थे-भीम, रंगा, मंगल नामक तीन युवक। तीनों ने आपस में बातें कर लीं और श्रीनाथ से मिलने गये। उन्होंने श्रीनाथ से कहा, ''हमारे माँ-बाप बूढ़े हो गये हैं। उनका पालन-पोषण करना हमसे नहीं हो पा रहा है। आपसे बिनती है कि ग्रामीण सभा में हम तीनों को नौकरी दिलवाइये। आप जो वेतन देंगे, उससे हम अपना परिवार चलायेंगे और अपने माँ-बाप की देखभाल करेंगे।'' श्रीनाथ ने उनकी इस बिनती को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि अब यह संभव नहीं हो सकता।

''आप नौकरी नहीं देते। कहीं और नौकरी पाने के लिए हम गाँव छोड़कर चले जाएँ तो हमारे माँ-बाप की देखभाल के लिए किसी ग्रामीण को नियुक्त करते हैं। यह सरासर अन्याय
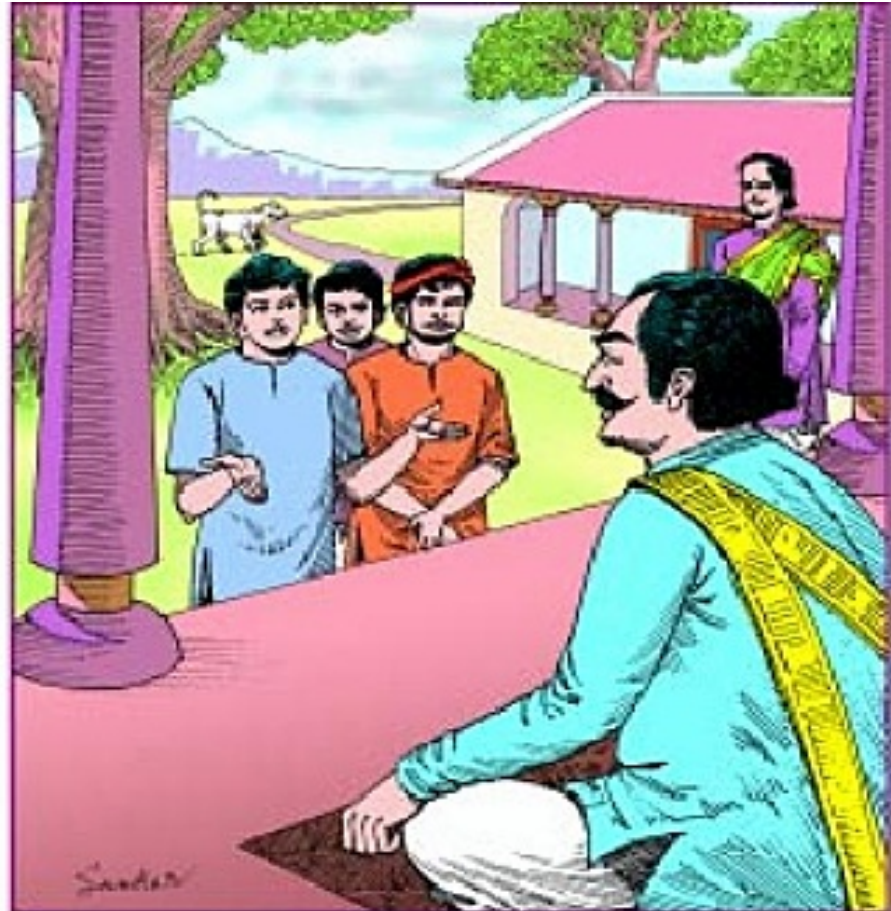
है,'' भीम ने कहा तो बाकी दोनों ने भी उसका समर्थन किया।

ठीक उसी समय धीनाथ वहाँ आया। पूरा विषय जान लेने के बाद उसने उन तीनों से कहा, ''गाँव के नागरिकों की देखभाल की जिम्मेदारी श्रीनाथ पर है। क्या तुम तीनों गाँव छोड़कर चले जाने को तैयार हो?''

''हम गाँव क्यों छोड़ें, कहीं और क्यों जाएँ?'' तीनों ने एक साथ निधड़क कहा।

उनके सवालों पर श्रीनाथ एकदम नाराज़ हो उठा। उसने तुरंत उन तीनों को ग्राम बहिष्कार की सज़ा दी। देखते-देखते उसके आदमियों ने उन तीनों को गाँव के बाहर कर दिया।

उन्हें यह सज़ा सुनाने के बाद श्रीनाथ ने धीनाथ से कहा, ''मुझे यह सोचने मात्र से डर लगने लगता है कि इस तरह कितने और परिवारों
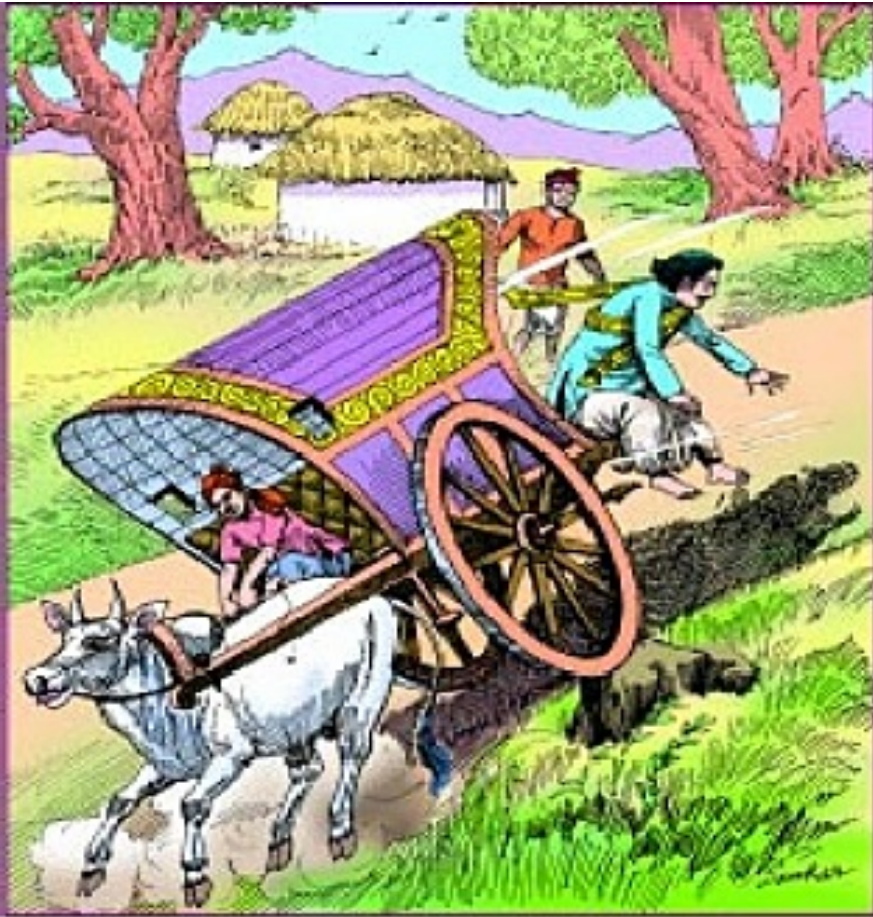
के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेना होगा।

''आप अनावश्यक डरिये मत। ये तीनों के तीनों बदमाश हैं। अच्छा हुआ, उन्हें आपने गाँव से भगा दिया। आपकी इस कार्रवाई से भविष्य में कोई भी ऐसा दुस्साहस नहीं करेगा।'' धीनाथ ने परेशान श्रीनाथ को ढाढस बंधाते हुए कहा।

अब गाँव के किसी भी आदमी ने फिर शरारत भरी ऐसी फरियाद करने की जुर्रत नहीं की। इस पर श्रीनाथ बेहद खुश हुआ और ऐसी अच्छी सलाह देने के लिए धीनाथ की प्रशंसा की।

कुछ दिनों के बाद श्रीनाथ को मालूम हुआ कि त्रिकाम, भीम, रंगा और मंगल पास ही के सत्यपुर नामक गाँव में रह रहे हैं और मेहनत की कमाई पर जी रहे हैं। पर लगता है कि वे अब भी सुधरे नहीं है। समय-समय पर गाली देते रहते हैं कि हमारी इन तकलीफ़ों की जड़ श्रीनाथ ही है।

इस घटना के एक सप्ताह के बाद श्रीनाथ सोचने लगा कि क्यों न खुद सत्यपुर जाऊँ और उनकी हालत देखूँ। इसके लिए उसने एक बैलवाली गाड़ी की भी व्यवस्था की। वह बैल बलिष्ठ और हट्टा-कट्टा था। उस गाड़ी को चलानेवाला निया भी गाड़ी चलाने में चतुर था। श्रीनाथ अकेले उस गाड़ी में रवाना हुआ।

श्रीपुर से सत्यपुर जाने के लिए वीरपुर, ध्रुवपुर, गृहपुर नामक गाँवों से होते हुए जाना पड़ता था। श्रीनाथ की गाड़ी वीरपुर गाँव पार कर गयी और ध्रुवपुर गाँव की सरहदों पर पहुँचते-पहुँचते गाड़ी का एक पहिया एक बड़े पत्थर पर चढ़ गया। इस आकस्मिक घटना की वजह से श्रीनाथ ज़मीन पर गिर गया। चोट लग जाने के कारण वह होश खो बैठा। धनिया भी नीचे गिर गया। गाड़ी का पहिया उसपर से होता हुआ लुढ़का। इसलिए वह उठ नहीं पाया।

उस समय भीम किसी काम पर सत्यपुर से ध्रुवपुर जा रहा था। उसने यह दृश्य देखा। उसने बैल को अपने काबू में लिया और श्रीनाथ व धनिया को गाड़ी में डाल ध्रुवपुर के एक प्रमुख वैद्य के यहाँ ले गया।

वैद्य ने पूरी जांच करने के बाद कहा कि धनिया जल्दी ही ठीक हो जायेगा, परंतु श्रीनाथ को होश में आने में एक हफ़्ता लग जायेगा। उसने भीम को यह कहकर भी सावधान किया कि श्रीनाथ की देखभाल में बड़ी सावधानी बरतनी होगी और उसकी सेवा-शुश्रूषा के लिए हमेशा किसी एक

आदमी को उसके साथ रहना होगा। श्रीनाथ की सेवा के लिए किसी और को लगाने पर धन की ज़रूरत थी।

भीम के पास इतना धन तो था नहीं। वह सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए? तब उस वैद्य ने कहा, ''मैं इसे अपने यहाँ रखकर इसकी चिकित्सा करने को तैयार हूँ। पर स्वस्थ हो जाने के बाद इस आदमी ने धन देने से इनकार कर दिया तो यह धन-राशि तुम्हें भरनी होगी। तुम्हें यह शर्त मंजूर हो मैं आवश्यक चिकित्सा शुरू कर दूँगा।'' भीम ने वैद्य की शर्त मान ली। वह खुद श्रीनाथ के साथ रहा और उसकी सेवा-शुश्रूषा की। तीन ही दिनों में श्रीनाथ होश में आ गया। वैद्य ने भी कहा कि भीम की सेवा के फलस्वरूप ही इतनी जल्दी वह होश में आ पाया। और तीन दिनों के अंदर श्रीनाथ बिलकुल स्वस्थ हो गया।

इस बीच गाड़ी का चालक धनिया भी स्वस्थ हो गया और उसमें चलने-फिरने की ताक़त आ गयी। वह श्रीपुर गया और सबको इस दुर्घटना का समाचार सुनाया। श्रीनाथ को देखने के लिए उनके परिवार के सदस्य और धीनाथ ही नहीं बल्कि बहुत से गाँववासी भी गये। सबने वैद्य की और भीम की सराहना की।

''मैंने अपना वृत्ति-धर्म निभाया। तिसपर भगवान की कृपा भी रही। इसके अलावा मैंने विशेष रूप से कुछ नहीं किया।'' वैद्य ने कहा।

''मुझसे बड़ी भूल हो गयी। भगवान से हम तीनों हर दिन प्रार्थना करते हैं कि अपनी भूल
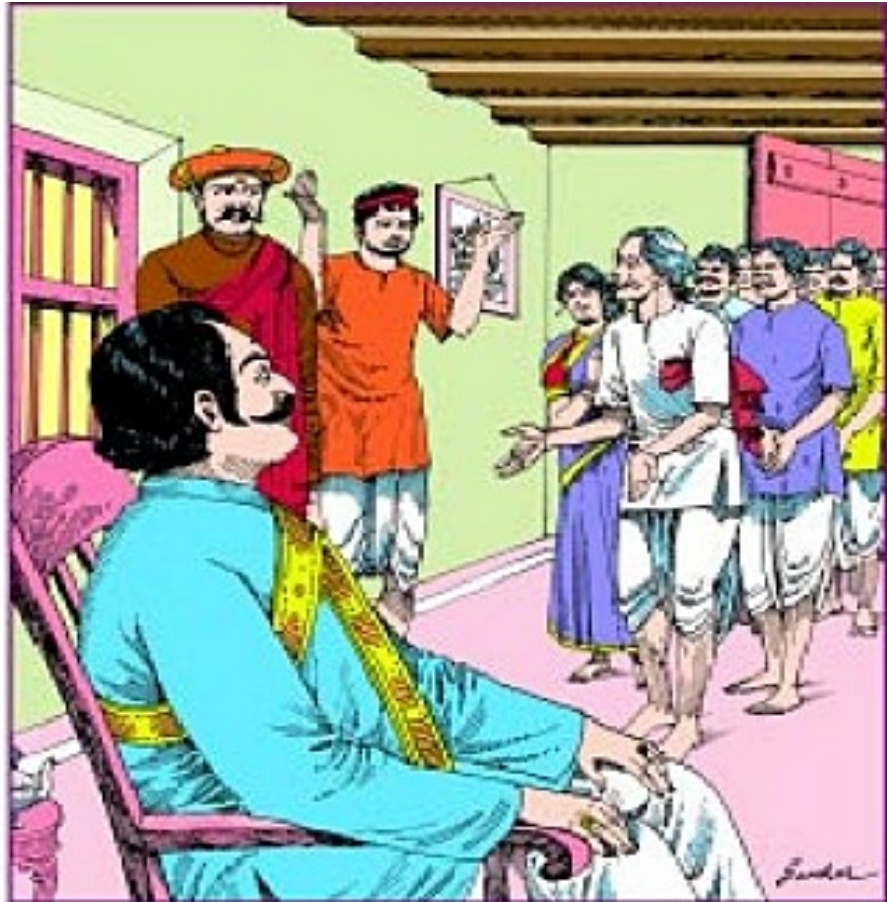
सुधारने का एक मौक़ा हमें दिया जाए। मैं वह पहला आदमी हूँ, जिसपर भगवान ने अपनी कृपा दर्शायी,'' भीम ने उत्साह-भरे स्वर में कहा।

श्रीनाथ ने वहीं का वहीं वैद्य को पर्याप्त धन दिया और सत्कार किया। घर लौटने के बाद भीम के बहिष्कार की सज़ा को रद्द करना चाहा और ग्राम सभा में उसे नौकरी भी दिलवानी चाही।

श्रीनाथ ने अपने मन की बात धीनाथ से बतायी और कहा, ''भीम को अपनी ग़लती पर पश्चाताप है। यही नहीं, वह भगवान से भी हर दिन प्रार्थना कर रहा है कि उसे क्षमा कर दिया जाए। उसे ग्राम सभा में नौकरी देना चाहता हूँ। आपकी क्या सलाह है?''

धीनाथ ने कहा, ''भीम के विषय में आप जो करना चाहते हैं, यह आपकी इच्छा पर निर्भर है। मैं कुछ कहना नहीं चाहता। लेकिन इसके

बाद आप कभी भी गाड़ी में यात्रा नहीं करेंगे। तीन और लोग हैं, जिन्हें उनकी दुष्टता के लिए दंड दिया गया है। वे भी भीम की तरह हर दिन भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं। यह दैव संकल्प है या संयोग है, हम नहीं जानते, इतना ज्ञान भी हम नहीं रखते।''

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, धीनाथ भले ही महान पंडित हो पर उसकी सलाह को देखते हुए लगता है कि उसमें दया, करुणा व क्षमा-भाव नाम मात्र के लिए भी नहीं हैं। अगर सही समय पर भीम की सहायता नहीं मिलती तो श्रीनाथ जीवित नहीं रहता। श्रीनाथ चाहता था कि उसे प्राण-भिक्षा देनेवाले भीम को ग्राम सभा में नियुक्त करूँ और तद्वारा अपनी कृतज्ञता व्यक्त करूँ। पर धीनाथ ने इस पर अपनी आपत्ति जतायी। क्या उसकी यह चेष्टा स्पष्ट नहीं कहती कि उसमें मानवता, विवेक, विज्ञता आदि का बिलकुल लोप है? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

वेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से विक्रमार्क ने कहा, ''मनुष्य मृग जाति से भिन्न है, क्योंकि उसमें दया, करुणा, प्रेम आदि सात्विक भाव भरे हुए होते हैं। परंतु पात्र अपात्र को पहचानकर ही उन्हें आचरण में लाना चाहिए। भीम का यह विचार अनुचित है कि भगवान ने जान-बूझकर ही उसकी ग़लती को सुधारने के लिए इस घटना की सृष्टि की। इसीलिए धीनाथ ने श्रीनाथ को सलाह दी कि भीम जैसे और तीन लोग हैं, इसलिए अच्छा इसी में है कि वह गाँव से बाहर न जाए। भीम को ग्राम सभा में नौकरी देने से हो सकता है, उन तीनों में दुराशा उत्पन्न हो जाए और वे भी ऐसे मौके की ताक में रहें। धीनाथ की इस सलाह में स्पष्ट दीखता है कि विभिन्न स्वभावों के मनुष्यों की उन्हें परख है। उनकी इन बातों में बौद्धिक परिपक्वता दीखती है और उनकी यह सलाह सर्वथा समुचित है।''

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

सागर की पूजा

मछुआरे, खास करके भारत के पश्चिमी तट के, जनवरी में मकर संक्रान्ति सागर-पूजा के रूप में मनाते हैं। वे सागर की अनन्त जलराशि को माँ मानते हैं और अन्नपूर्णेश्वरी कहकर संबोधित करते हैं। यह अनुष्ठान-पूजा न केवल पूरे समुदाय को एक साथ मिलाती है, बल्कि यह उन्हें पर्यावरण, अपने पेशे के लिए समर्पण की आवश्यकता तथा समुद्र में आरोपित दिव्यता के प्रति उन्हें सचेतन बनाती है।

गुजरात में, मकर संक्रान्ति सूर्य की उत्तर की ओर यात्रा यानी उत्तरायण के आरंभ के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। यह हर्षोल्लास का दिवस होता है और इसे पतंगबाजी के दिन के रूप में मनाया जाता है, जिसमें बूढ़े, जवान, बच्चे सभी भाग लेते हैं। उस दिन हजारों रंग-बिरंगी पतंगें उल्लासपूर्ण प्रतियोगिता की भावना से अधिक से अधिक ऊँचाइयों को छूती हुई आसमान को जगमगा देती हैं। उत्साह और उत्तेजना इस अवसर की विशेषता होती है।

शैलाश्रय परंपरा की सूची में

मध्य प्रदेश में भीमबेटका के प्रसिद्ध शैल-आश्रयों को यूनेस्को की विश्व परंपरा सूची में शामिल कर लिया गया है। गुफाओं में मध्य प्रस्तर युग (३५०० तथा २००० ईसा पूर्व) के समय के चित्र हैं। इन गुफाओं की खोज ५० वर्ष पूर्व विक्रम विश्वविद्यालय के प्रो. डबल्यू वकंकर द्वारा की गई थी। यहाँ कुल ५०० गुफा आश्रय हैं। चित्रों में अधिकतर महाभारत की कहानियाँ दर्शित की गई हैं। वास्तव में इस स्थान का नाम पांडव राजकुमार भीमसेन पर दिया गया है।

भारत की पौराणिक कथाएँ - २१

एक लाठी के लिए
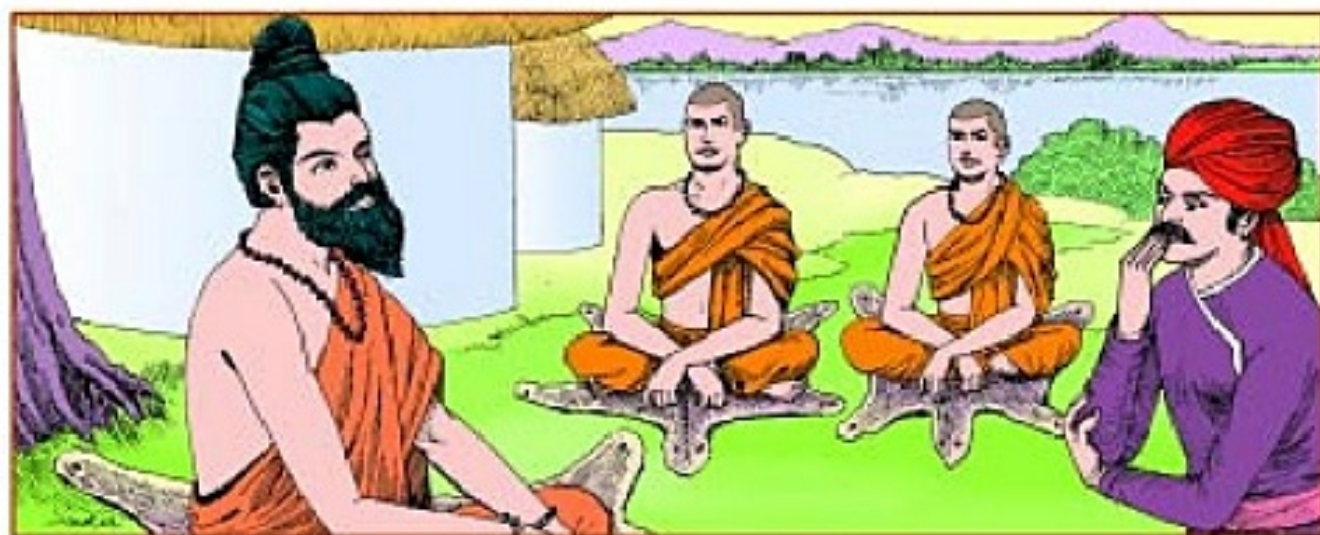
राम और प्रकाश एक बड़े ऋषि, वनाचार्य, के शिष्य थे। दोनों बहुत बड़े विद्वान थे। उन्होंने वेद, उपनिषद तथा अन्य शास्त्रों का बहुत ध्यानपूर्वक अनुशीलन और मनन किया था। उन्हें अनेक सिद्धियाँ भी प्राप्त थीं।

वनाचार्य का आश्रम सरयू नदी के किनारे था। लेकिन उनके गुरु हिमालय की एक घाटी में रहते थे। एक दिन उन्हें एक यात्री ने कहा कि उनके गुरु ने उन्हें तुरंत हिमालय में बुलाया है।

वनाचार्य खड़े हो गये। ''मुझे अवश्य जाना चाहिए।'' उन्होंने अपने शिष्यों को बताया। ''अपना ध्यान रखना।''

चकित होकर शिष्यों ने पूछा, ''गुरुजी, इतनी जल्दी की आवश्यकता क्या है?''

''एक शिष्य के लिए गुरु के आदेश से अधिक और आवश्यक क्या हो सकता है? मुझे तुरंत जाना चाहिए।'' वनाचार्य ने कहा।

''लेकिन, आचार्य जाने से पूर्व आश्रम के सुगम संचालन की व्यवस्था नहीं करेंगे क्या?''

''सबकुछ अपने आप हो जायेगा !'' वनाचार्य ने कहा।

''आप कब कब लौट आयेंगे, आचार्य?'' शिष्यों ने पूछा। ''कह नहीं सकता। हो सकता है, कभी न लौटूँ।''

वनाचार्य कुछ और बोलना नहीं चाहते थे। उन्होंने तुरंत नदी को पार किया और हिमालय की ओर चल पड़े। दोनों शिष्यों और स्थानीय प्रशंसकों ने उन्हें विदाई दी। राम आश्रम में ही रह

गया, लेकिन प्रकाश अपने गाँव में जाकर महात्मा की तरह पवित्र जीवन बिताने लगा।

उसके पास कई शिष्य एकत्र हो गये और वह प्रकाश बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक तपस्वी के समान उसका जीवन सादा था। वह एक छोटी-सी कुटिया में रहता था। उसके पास दो चार कपड़ों के अलावा व्यक्तिगत उपयोग के लिए एक लाठी थी और पीतल का एक कमण्डल था।

जो भी हो, उसे यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि राम, जो अब राम बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गया था, विलासी का जीवन बिता रहा है। उसके एक धनी जमींदार शिष्य ने उसके लिए एक आरामदायक भवन निर्मित कर दिया था और कुछ नौकर भी दे दिये थे। उसके लिए जमींदार की रसोई से विशेष रूप से उसके लिए तैयार किया गया स्वादिष्ट भोजन आता था।

"कितना घोर पतन !" प्रकाश बाबा ने सोचा। उसने निश्चय किया कि वह सांसारिक आकर्षणों की खाई में गिर जाने के खतरों के बारे में अपने मित्र को चेतावनी देगा। आखिर वह राम बाबा के आश्रम में पहुँचा और उसने देखा कि जो कुछ उसने सुना था वह मिथ्या नहीं था। "मेरे प्रिय मित्र," उसने राम बाबा को एक दिन एकान्त में कहा, "क्या जीवन के भोग-विलास में पड़कर तुम ठीक कर रहे हो? ये आकर्षण तुम्हारे सच्चे लक्ष्य से तुम्हें दूर ले जायेंगे। अच्छा होगा, इस स्थान से दूर तुम मेरे आश्रम में आ जाओ और फिर से अपना आध्यात्मिक जीवन आरम्भ करो।"

"क्यों नहीं, यदि यही प्रभु की इच्छा है !" राम बाबा ने कहा।

तभी उनके एक पुराने मित्र ने जल्दी में आकर कहा, "गुरु वचनाचार्य नदी के दूसरे किनारे पर

प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे वहाँ पर केवल थोड़ी देर के लिए रहेंगे। वे तुम दोनों से मिलना चाहते हैं। शायद वे चाहते हैं कि तुम दोनों उनके साथ हिमालय में जाओ।''

''कैसा संयोग है कि मैं यहाँ हूँ।'' प्रकाश बाबा ने कहा। ''यदि गुरु अपने साथ चलने के लिए कहेंगे तो मैं अपने शिष्यों को इसके बारे में कैसे बता पाऊँगा?'' उसने हिचकिचाते हुए कहा।

''गुरु निश्चय करेंगे।'' राम बाबा ने कहा। लेकिन राम बाबा ने स्वयं किसी को कुछ नहीं बताया।

दोनों सरयू नदी की ओर चल पड़े। मुसाफिरों से भरी नाव चल पड़ने को तैयार थी। उसमें दो-तीन यात्रियों के लिए अब भी जगह खाली थी।

अचानक प्रकाश बाबा को अपनी लाठी की याद आई। यह एक तेलाक्त और चमकदार धातु की मूठ के साथ शानदार चीज़ थी।

''राम, तुम चलो। मैं अपनी लाठी लेकर अभी आता हूँ जो तुम्हारे कमरे में छूट गई है। मैं नाव के दूसरे खेप में आता हूँ।'' प्रकाश बाबा ने कहा।

राम बाबा और गुरु के संदेशवाहक नाव में चढ़ चुके थे। नाविक ने शीघ्र ही नाव खेना शुरू कर दिया।

प्रकाश बाबा को लाठी लेकर नदी किनारे आने में आधा घण्टा लग गया। लेकिन तब तक नदी उमड़ने लगी। नौका नहीं लौटी। जब तक बाढ़ रुक नहीं जाती, प्रकाश बाबा के नदी पार करने की संभावना नहीं थी। कई दिन भी लग सकते थे।

प्रकाश बाबा एक शिला पर बैठकर रोने लगे। उन्होंने महसूस किया कि ''अपने मित्र को आरामदायक जीवन से परहेज करने की नसीहत देना मेरी कितनी मूर्खता थी। वह विलासी जीवन बिताते हुए भी किसी चीज से आसक्त नहीं है। उसने आश्रम छोड़ते समय अपने शिष्यों को कुछ बताना भी जरूरी नहीं समझा। उसके लिए हर चीज़ की चिन्ता करने के लिए भगवान हैं। लेकिन बाह्य रूप से त्याग-तपस्या का जीवन बिताते हुए भी मैं अपनी तुच्छ चीजों से भी मन को हटा न सका। मैं एक मामूली लाठी के लिए अपने गुरु के साथ रहने के सुनहले अवसर को खो बैठा।''

- ***विश्ववसु***

समाचार झलक

ज़य ज़य जीवित है

ऐसा नहीं था कि यह 'टाइगन' मरने ही वाला था, लेकिन १८० दिनों से भी अधिक अवधि तक जीवित रहकर इस बाघ-सिंह की संकर जाति ने एक इतिहास की सृष्टि की है। ज़ैय-ज़ैय नामक इस शावक का जन्म २७ मार्च को हुआ था और इसका पालन पोषण चीन के हूनान प्रान्त में चांगशा वन्य जीवन पार्क में हो रहा है।

संकर पशु प्रायः अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहते किन्तु वन्य जीवन अधिकारीगण आशा कर रहे हैं कि ज़य ज़य बचपन की प्रारंभिक कठिनाइयों को झेल लेगा और बुढ़ापे की परिपक्व उम्र तक जीवित रहेगा।

सिकता मूर्तिकला के लिए पुरस्कार

उड़ीसा के सुदर्शन पटनायक बर्लिन में सिकता मूर्तिकला प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले प्रतियोगियों में भारत के एकमात्र प्रतियोगी थे। अलग-अलग देशों से अन्य कुल १९ प्रतियोगी आये थे। प्रथम और द्वितीय पुरस्कार क्रमशः रूस और निदरलैण्ड्स को मिले। पटनायक ने गणेश की मूर्ति बनाई और तीसरा पुरस्कार जीता। छब्बीस वर्षीय सुदर्शन पटनायक इस शौक का अभ्यास पिछले १३ वर्षों से करते आ रहे हैं। वे उड़ीसा में एक पाठशाला चला रहे हैं जहाँ वे ५० छात्रों को सिकता मूर्तिकला सिखाते हैं।

रहस्य और खोज के सच्चे मुकदमे

कैसे छाया ने जान बचाई !

जेल की एकान्त कोठरी में जो अर्द्धमन विचारों में खोया बैठा था। उस पर नगर के एक प्रमुख राजनैतिक व्यक्ति की हत्या की कोशिश का आरोप था।

एक शामको जेलर ने एक आगन्तुक की घोषणा की। कैदी अपनी तन्द्रा से उठा और अपरिचित आगन्तुक पर नजर डाली।

''घबराओ नहीं दोस्त। मैं जॉन वाट्सन हूँ, एक वकील। मैं तुम्हें बचाने आया हूँ, निःशुल्क।'' लंबे कद के अधेड़ आदमी ने कहा।

वकील ने घटना के बारे में प्रातःकालीन समाचार पत्र में पढ़ा था। सन् १९१० में २२ मई, रविवार को अपराह्न ठीक २.२५ पर एक राजनैतिक दल के नेता विली बैनिस्टर ने, जब वे हर रोज की तरह टहलने के बाद लौटे, तब अपने घर के सामने के पोर्च में चमड़े का एक थैला देखा। उन्होंने देखा कि थैले के की-होल से लेकर उनके दरवाजे के हत्थे तक एक पतला सफेद धागा बंधा हुआ है।

बैनिस्टर ने पुलिस को बुलाया। कई जासूसों ने आकर थैले को खोला। उसके अन्दर डायनामाइट स्टिक्स के बीच एक पिस्तौल थी। सफेद धागा इसके ट्रिगर से बँधा हुआ था।

समाचार पत्र की रिपोर्ट ने वकील के मन में शक पैदा कर दिया था। उसे लगा कि यह गढ़ी हुई झूठी कहानी है। उसका संदेह और गहरा हो गया जब उसी दिन दोपहर के बाद यह समाचार आया कि संदिग्ध व्यक्ति पहले से ही जेल में है। वह तुरंत जेल में पहुँचा।

''कृपया मेरे लिए अपना समय नष्ट न करें। आपकी सारी कोशिश बेकार हो जायेगी।'' कैदी ने कहा।

''यह सच है कि मैं उस राजनैतिक आदमी से

नफरत करता हूँ और हाल में उससे हमारा झगड़ा भी हो गया था। जो भी हो, मेरे पास कुछ नहीं है, कोई नहीं है, जो प्रमाणित कर सके कि अपराध के समय मैं वास्तव में कहीं और था। आह ! मेरा कोई मित्र नहीं है, कोई गवाह नहीं है और जमानत के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।''

जॉन बाटसन ने, फिर भी, जो ऑर्डमन को बचाने का फैसला कर लिया। ''घबराओ नहीं!'' तुम्हें दोषी ठहराने के लिए सबूत काफी नहीं हैं।''

वकील तब भी शान्त बना जब सात गवाहों ने दृढ़तापूर्वक कहा कि उन्होंने जो को राजनीतिज्ञ के घर के निकट २२ मई को २.२५ पर चमड़े का थैला पाये जाने के तुरंत पहले देखा था।

उसके बाद मुख्य गवाह लम्बी सफेद पोशाक में दो छोटी लड़कियाँ आईं। सात गवाहों ने अपने प्रमाण देते समय घर के पास से गुजरती हुई इन दो लड़कियों की चर्चा की थी। इन दो बहनों ने जो कहानी कही वह सीधी-सादी थी।

वे ठीक १ बजकर ५० मिनट पर मई के रविवार को गिरजा घर से अपने घर वापस जाते समय बिली बैनिस्टर के घर के बगल से गुजर रही थीं। उन्होंने जो ऑर्डमन को बिल्डिंग के पीछे की एक गली में तेजी से जाते हुए देखा। उन्होंने यह भी याद रखा कि वह लंगड़ा था तथा चेक की कमीज़ और नीली टोपी पहने था।

वहीं पर सामने बॉक्स में चेक शर्ट में कैदी बैठा था। जब उसे हॉल में चलने के लिए कहा गया, तब वह लंगड़ा कर चला। एक नीली टोपी उसे दिखाई गई जिसे उसने तुरंत पहचान कर कहा कि वह उसी की है।

ऐसा लगा जैसे मुकदमा खत्म हो गया, मुलज़िम के वकील ने एक लंबी सांस ली।

किन्तु अब भी उसे आशा थी। उसने एक मौका और लेना चाहा। धीरे-धीरे बीह भारी मन से उठा और दोनों बहनों के पास गया।

''यह बताओ, गिरजा घर से बाहर आने के बाद तुमने क्या किया?''

''हम लोगों ने फोटो खिंचवाया।''

''क्या किसी स्टूडियो में गये थे?''

''नहीं, बूढ़े पादरी ने यह उदारता दिखाई थी?'' हम लोग सिर्फ़ गिरजा घर के सामने खड़े थे।''

हुए वह गिरजा घर के पास गया और उसके आगे खड़ा हो गया। उसके ऊपर घण्टागार का टावर धुंधला दिखाई दे रहा था, जिसकी घड़ी ने तीखी आवाज में दो बजने का संकेत दिया।

जॉन वाटसन कार में बैठ कर वेधशाला चले गये। वहाँ वे खगोल वैज्ञानिक से मिले। फिर वे कचहरी जाकर इस आधार पर कि वे नया सबूत पेश करने जा रहे हैं, मुकदमे को उस दिन के लिए स्थगित करा दिया।

''क्या फोटो तुम्हारे पास है?''

''हाँ, यह हमारे थैले में अभी मौजूद है। आप ले सकते हैं, सर। हमारे पास दूसरी प्रति है।'' छोटी लड़की ने कहा।

तभी जज ने मध्यान्तर की घोषणा कर दी। जॉन वाटसन पार्क में चले गये। वे फोटो पर चिन्तन करते हुए वहाँ एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। गिरजा घर के सामने लम्बी सफेद पोशाक में दो छोटी-छोटी लड़कियाँ खड़ी थीं। उनकी स्पष्ट गवाही ने, ऐसा उसे लगा, उसके लिए मुकदमे को सील बन्द कर दिया था। वह फोटो को निहारता रहा। क्या इससे कुछ प्रकाश पड़ सकता है?

अचानक फोटो में एक छोटे से ब्योरे की ओर उसका ध्यान गया। उसके मन में ढेर सारे विचार आने लगे। फिर भी उसने महसूस किया कि कुछ वह पकड़ नहीं पा रहा है। फोटो लिये

दूसरे दिन प्रातः कचहरी का हॉल ठसाठस भरा था। क्योंकि समाचार फैल गया कि जॉन वाटसन कोई नया आश्चर्य देने जा रहे हैं।

बचाव पक्ष का पहला गवाह बुलाया गया। वह छोटे कद का हट्टा-कट्टा आदमी था जिसके थोड़ी-सी दाढ़ी और सफेद मूँछ थी।

''सर, आप विश्वविद्यालय में खगोल विज्ञान के प्राफेसर हैं ?''

''हाँ, मै हूँ।''

''यहाँ एक फोटो है। कृपया इसे ध्यान से देखें। क्या आप बता सकेंगे कि यह फोटो किस समय लिया गया होगा?''

''हाँ, मैं केवल समय ही नहीं, बल्कि दिन भी बता सकता हूँ।''

''आप यह निश्चयपूर्वक कैसे कह सकते हैं ?''

कचहरी का कमरा स्तब्ध था। खगोल वैज्ञानिक ने कुछ हिसाब-किताब किया। अपनी दाढ़ी-मूँछ पर हाथ फेरा, फिर धीरे-धीरे कहना शुरू किया।

"यह बहुत सरल है। यहाँ, क्या फोटो में एक छाया देखते हो ? यह गिरजा घर की मीनार की छाया है। अच्छा तो छाया से निर्मित इसके कोण की गणना द्वारा मैं आसानी से कह सकता हूँ कि तब क्या समय रहा होगा।"

"कहिये, ठीक कितने बजे फोटो लिया गया?"

"कैमरे को १९१० में २२ मई को दोपहर के बाद ३ बज कर १० मिनट पर क्लिक किया गया।"

एक विशेषज्ञ के इस सबूत ने सात गवाहों तथा लम्बी सफेद पोशाकवाली दो छोटी-छोटी लड़कियों के साक्ष्य को सन्दिग्ध और कमज़ोर बना दिया। उनके स्मरण की क्षमता में सन्देह था। यदि उन्होंने मुलजिम को सचमुच देखा भी हो तो २.२५ पर उस रहस्यमय बैग के पाये जाने के पूरे ४५ मिनट बाद ही देखा होगा।

किसी ने उस खगोल वैज्ञानिक से जिरह करने का साहस नहीं किया। उसकी गणना और सबूत सही और ठोस थे। पूरी रात वह अंकों के साथ संघर्ष करता रहा था और प्रातःकाल गिरजा घर के सामने के घटनास्थल का सर्वेक्षण करने भी गया था।

और यह सब करने की प्रेरणा उसे एक निर्दोष जीवन को अनुचित सजा से बचाने की संभावना से मिली थी।

अन्त में मुकदमा खारिज़ हो गया और मुलजिम रिहा कर दिया गया। किन्तु कुछ लोगों को अब भी विश्वास नहीं था कि कैसे फोटो पर की मात्र एक छाया चमत्कार कर सकती है।

एक वर्ष बाद उन सब ने गिरजा घर के सामने जाकर उसी दिन और उसी समय अपने फोटो लिये। जब फोटो प्रिंट तैयार हो गया, तब उन सब ने आश्चर्य के साथ देखा कि मीनार की छाया ठीक उसी कोण पर पड़ी थी जैसा कि लम्बी सफेद पोशाकवाली दो छोटी-छोटी लड़कियों के फोटो पर थी।

नदी से लाये गये बच्चे

एक समय एक राजा था जो अपनी प्रजा को समर्पित था। वह उनके कल्याण के लिए बहुत चिंतित रहता था। वह अपने मंत्री तथा गुप्तचरों से प्रजा के बारे में जानकारी लेता रहता था। फिर भी वह स्वयं जाकर देखना चाहता था कि उसकी प्रजा को कोई कष्ट तो नहीं है। इसलिए वह राज्य में वेश बदलकर घूमा करता, लोगों की बातचीत सुनता तथा स्वयं भी उनसे बातें करता।

एक दिन वह अपने एक दरबारी के घर के पास से गुजर रहा था। आधी रात बीच चुकी थी। घर के और निकट जाने पर उसकी एक खिड़की उसने खुली देखी। अंदर मद्धिम प्रकाश था और वह अंदर की बातचीत सुन सकता था। उन्होंने अनुमान लगाया कि तीन युवतियाँ आपस में बात कर रही हैं और कह रही हैं कि कौन किससे विवाह करना चाहेगी।

"तुम जानती हो, मैं खाने की शौकीन हूँ। इसलिए मैं शाही बावर्ची से शादी करना चाहूँगी। तब मैं राजा और रानी के लिए बनाये गये भोजन का स्वाद ले सकती हूँ।" उनमें से एक ने कहा।

"यदि मेरा विवाह किसी मंत्री से हो जाये तो मैं उसके साथ पूरे राज्य में भ्रमण करूँगी, पड़ोसी राज्यों में भी। तुम्हें मालूम है कि मुझे नये-नये स्थानों को देखने का कितना शौक बचपन से रहा है !" दूसरी आवाज ने कहा।

कुछ देर तक कोई आवाज नहीं आई। फिर उन्हीं आवाजों ने कहा, "तुम चुपचाप क्यों हो? तुम हम सब को बताती क्यों नहीं कि तुम किससे विवाह करना चाहोगी !"

राजा ने एक तीसरी आवाज सुनी। "यदि राजा मुझसे विवाह कर ले तो मैं उसे सुंदर बच्चे दूँगी।" इस पर खुशी की हँसी सुनाई पड़ी।

राजा वहाँ से हट गया और शीघ्र ही महल में लौट आया। वह इस पर मनन करने लगा।

उसके दो रानियाँ पहले से थीं लेकिन किसी से सन्तान नहीं थी। उसने अनुमान लगाया कि वे आवाजें तीन बहनों की थीं। और उसने आश्चर्य के साथ सोचा कि वह उसे तीसरी रानी क्यों न बना ले जो उससे विवाह करने की अभिलाषा रखती है।

दूसरे दिन प्रातः काल उसने तीनों बहनों को महल में लाने के लिए पालकी भेजी। उन्हें दरबार में लाया गया और राजा ने उन बहनों के सामने उनके पिता को बुलाकर कहा, "मैं तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी का विवाह शाही बावर्ची के साथ करने का प्रबन्ध करूँगा और दूसरी बेटी का मंत्री के साथ।"

दरबारी अपनी सबसे छोटी बेटी के बारे में राजा से कुछ सुनने के लिए चिंतित होकर प्रतीक्षा करने लगा, जो कभी पिता तो कभी राजा की ओर देख रही थी।

राजा मुस्कुराया और दरबारी से बोला, "मैं तुम्हारी सबसे छोटी बेटी को अपनी तीसरी रानी बनाने का विचार रखता हूँ।" लड़की की खुशी का ठिकाना न रहा।

ये तीनों विवाह बड़े शानदार ढंग से संपन्न हुए और तीनों दुल्हनें अपने-अपने घरों में रहने लगीं। अब दोनों बड़ी बहनों ने महसूस किया कि उन्हें मामूली भवनों से ही संतोष करना होगा जबकि उनकी छोटी बहन महल में रानी बनकर राज करेगी। स्वाभाविक है कि उन्हें उससे ईर्ष्या होने लगी। फिर भी छोटी बहन

को उनके लिए बहुत प्यार था। उसने सोचा कि यदि उनमें से कोई एक राजा से विवाह करने की इच्छा प्रकट करती तो वह किसी और से विवाह कर लेती। इसलिए वह उनका कृतज्ञ होना चाहती थी।

शीघ्र ही छोटी रानी माँ बननेवाली थी और उसने राजा से कहा कि बच्चे के जन्म के समय वह दोनों बहनों से मदद लेना चाहती है। राजा तुरंत तैयार हो गया और दोनों बहनें महल में आकर रहने लगीं। जब बच्चे का जन्म हुआ, जो बालक था, दुष्ट बहनों ने रानी की दासी से मिलकर षडयंत्र कर महल के निकट की नदी में बालक को टोकरी में रखकर बहा दिया। उन सबने रानी को एक छोटा पिल्ला देते हुए कहा, "तुमने इसी को जन्म दिया है।" "यदि यही

राजा का राज्य में गुप्त रूप से घूमना जारी था। वह प्राय: रानी के बारे में टिप्पणी सुना करता कि उसने एक पिल्ले, एक बिलौटे और एक मिट्टी की गुड़िया को जन्म दिया है। कुछ लोगों ने कहा कि रानी सामान्य नारी नहीं है, जबकि कुछ लोगों ने उसे डायन कहा। कुछ लोगों ने अर्थ लगाया कि यह राज्य पर आनेवाली किसी महाविपत्ति जैसे-बाढ़, महामारी का अशुभ लक्षण है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि रानी को महल में नहीं रखा जाये। इसलिए राजा ने उसे वनवास दे दिया।

भगवान की इच्छा है तो इसी पिल्ले को अपना बच्चा स्वीकार करती हूँ।'' निराश रानी ने दुखी होकर कहा।

दूसरे वर्ष भी रानी ने एक सुंदर बालक को जन्म दिया। रानी की दोनों बहनें पुनः बालक को टोकरी में रखकर नदी में बहा देने में कामयाब हो गयीं। और रानी के पास एक बिलौटा रख दिया। रानी ने इसे प्रभु की इच्छा समझकर स्वीकार कर लिया।

एक वर्ष बाद रानी ने एक प्यारी सी बच्ची को जन्म दिया। बहनों ने अपनी दुष्ट योजना के अनुसार उसे भी नदी में बहा दिया और रानी को एक मिट्टी की बनी सुंदर गुड़िया पकड़ा दी। रानी के साथ-साथ राजा भी इन विचित्र घटनाओं से परेशान था। उसे उन आवाजों की याद आई जो उसने आधी रात को अपने दरबारी के घर से सुनी थीं - ''यदि राजा मुझसे विवाह कर ले तो मैं उसे सुंदर बच्चे दूँगी।''

अब ऐसा हुआ कि महल के पास नदी किनारे एक ब्राह्मण रहता था। एक दिन नदी में स्नान करते समय उसने पानी पर तैरते हुए एक टोकरी देखी। उसमें एक नवजात शिशु को देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

उसे वह उठाकर घर ले गया और पत्नी को दे दिया। उस ब्राह्मण दम्पति के कोई संतान नहीं थी, इसलिए उन्होंने उसे बड़े प्यार से पाला-पोसा।

एक वर्ष के बाद ब्राह्मण को दूसरे बालक की टोकरी दिखाई पड़ी, जिसे वह फिर अपने घर ले गया। ब्राह्मण परिवार ने देखा कि दोनों बच्चों में बहुत समानता है।

ब्राह्मण के आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने एक वर्ष के बाद एक और टोकरी नदी में

बहती हुई देखी। इस बार उसमें बालिका शिशु थी। वह बालिका भी दोनों बालकों से मिलती-जुलती थी। ब्राह्मण दंपति ने अपना भरपूर प्यार देकर उन तीनों बच्चों का पालन-पोषण किया। उनके नाम मदन, मोहन और मोहिनी रखे।

एक दिन ब्राह्मण गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसका देहान्त हो गया। कुछ दिनों के बाद उसकी पत्नी भी स्वर्ग सिधार गई। बच्चे अभी बड़े हो रहे थे। फिर भी वे समझ गये कि अब उन्हें अपना प्रबंध स्वयं करना है।

एक दिन उनके पास एक अप्रत्याशित आगन्तुक आ गया। राजा मार्ग भटक गया और एक मात्र प्रकाश को देखता हुआ वहाँ पहुँच गया जहाँ बच्चे रहते थे। वह थका, भूखा और प्यासा था। बच्चों ने उसे खाना दिया और रात्रि में विश्राम करने दिया।

दूसरे दिन प्रातः राजा ने बच्चों को अपना परिचय देते हुए उन्हें आवश्यकता पड़ने पर हर तरह की सहायता देने का आश्वासन दिया। अपनी राजधानी लौट आने पर उसने बच्चों के पास सोने के सिक्कों का एक थैला भेज दिया। वह चाहता था कि बच्चे किसी चीज की कमी महसूस न करें।

जबसे मोहिनी को मालूम हुआ कि एक रात के लिए राजा उसके अतिथि थे, तब से वह भाइयों को सुझाव देने लगी कि उन्हें भी महल नहीं तो कम से कम महल जैसे भवन में रहना चाहिए। उसके स्नेहशील भाइयों ने उसकी इच्छा पूरी कर दी और तीनों नये भवन में रहने लगे। मोहिनी घर को कलात्मक वस्तुओं से सजाने लगी और चारों ओर फूल-पौधे लगाने लगी।

एक दिन एक योगी उस रास्ते से निकला। नदी किनारे जंगल के बीच उस सुंदर भवन को देखकर वह चकित रह गया। मोहिनी ने उससे पूछा कि क्या उस भवन में कोई कमी है। उसने सुझाव दिया कि इस भवन में एक सुनहला वृक्ष, एक सुनहले पिंजड़े में एक सुनहला तोता तथा एक सुनहला धनुष होना चाहिए जिन्हें एक पहाड़ के ऊपर बने एक महल में से लाया जा सकता है। उसने महल में पहुँचने का मार्ग बता दिया।

योगी के चले जाने पर बहन-भाइयों ने विचार-विमर्श करके यह निश्चय किया कि

इन वस्तुओं को लाने के लिए मदन पहाड़ के ऊपर महल में जायेगा। यात्रा करने से पूर्व उसने मोहिनी को एक तलवार देते हुए कहा, ''यदि हमें कुछ हो गया तो इस तलवार की चमक चली जायेगी।''

दिन और महीने बीत गये लेकिन तलवार की चमक बनी रही। मोहिनी ने समझा कि मदन सुरक्षित है। लेकिन एक दिन सुबह उसने देखा कि चमक गायब हो गई।

बात ऐसी हुई कि जब मदन पहाड़ी महल की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था तब उसने एक आवाज सुनी, ''मदन, दूसरी सीढ़ी पर न जाओ!'' लेकिन उसे योगी की चेतावनी याद थी जिसने उसे सीढ़ियाँ चढ़ते समय पीछे देखने से मना किया था। इसलिए उसने आवाज पर ध्यान नहीं दिया। उसने मुश्किल से दो सीढ़ियाँ और चढ़ी होंगी कि उसने फिर आवाज सुनी। ''मदन, मुझे भी साथ आने दो।'' उसने समझा कि उसे उसके पालक पिता बुला रहे हैं। उसने पीछे मुड़कर देखा। दूसरे ही क्षण वह पत्थर की तरह गिर पड़ा।

मोहन अपने भाई की खोज में जाने को तैयार हो गया। उसने जाते समय बहन को एक बांसुरी दी और कहा, ''यदि मुझे कुछ हो गया तो यह दो टुकड़ों में टूट जायेगा।''

वह भी पहाड़ी महल की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। वह अभी दो ही सीढ़ियाँ चढ़ पाया था कि उसने अपने भाई की आवाज सुनी, ''मैं तुम्हारे पीछे हूँ। मेरा इंतजार करो।'' क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य भाई की खोज करना था न कि योगी की बताई गईं तीन वस्तुएँ उपलब्ध करना, इसलिए उसने पीछे मुड़कर देखा और तत्क्षण पत्थर की तरह लुढ़क गया।

मोहिनी को यह देखकर बहुत आघात लगा कि बाँसुरी टूटकर दो टुकड़ों में बँट गई। वह दिन भर रोती रही। दूसरे दिन उसने साहस बटोरा और अपने भाइयों का अनुगमन किया।

मार्ग में उसे बताया गया कि दो युवक पहले इसी मार्ग से जा चुके हैं। अंत में वह महल में जानेवाली सीढ़ियों पर पहुँची। आवाजों और चेतावनियों की परवाह न कर वह सीढ़ियों पर चढ़ती गई और एक आंगन में पहुँची जहाँ उसने एक सुनहला पेड़ देखा। पेड़ पर एक सुनहला पिंजड़ा टंगा था और उसमें एक सुनहला तोता था। वह बोला, ''मुझे आपकी आज्ञा की

प्रतीक्षा है। तुम वहाँ पर एक ढोल पर रखा हुआ एक सुनहला धनुष देखोगी। धनुष से तुम ढोल को पीट सकती हो। तुम्हारे भाई जो पत्थर में बदल गये हैं आवाज सुनकर जीवित हो जायेंगे।''

मोहिनी ने वैसा ही किया जैसा कि तोता ने उसे कहा था। ''अब मेरे पास सुनहला धनुष है और सुनहला तोता है। मुझे सुनहला वृक्ष कैसे मिलेगा जिसकी खोज में मेरे भाई आये थे?'' उसने पूछा।

तोते ने उत्तर दिया, ''सिर्फ धनुष से वृक्ष को स्पर्श करने से यह उसके हाथ में आ जायेगा।''

''मोहिनी! तुम यहाँ हो!'' मदन और मोहन ने आश्चर्य के साथ कहा।

''मैं तुम्हें हर चीज़ बाद में बताऊँगी। अभी तुममें से कोई इस धनुष को ले लो और उस सुनहले वृक्ष को उससे स्पर्श करो। यह तुम्हारे हाथ में आ जायेगा।'' मोहिनी ने उत्तेजित होकर कहा। शीघ्र ही वे तीनों आने के लिए सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे।

लौटने के कुछ दिनों के पश्चात उन्होंने राजा को अपने घर पर निमंत्रित किया। उनका घर देखने के बाद वह चकित रह गया। जब वे भोजन करने बैठे तब मोतियों, हीरों और माणिक्यों से बने पकवान देखकर राजा हक्का-बक्का हो गया। ''यह कैसा बेतुका है!'' राजा ने टिप्पणी की।

अचानक सुनहला तोता बोला : ''यदि एक नारी पिल्ले, बिलौटे तथा मिट्टी की गुड़िया को जन्म दे सकती है तो सुनहले वृक्ष द्वारा दिये गये मोती, हीरे का पकवान भी बनाया जा सकता है!''

राजा ने तोते के तात्पर्य को समझा और उससे पूछा, ''तब मेरे बच्चे कहाँ हैं?''

''ठीक तुम्हारे सामने! पिल्ला, बिलौटा तथा गुड़िया उसकी ईर्ष्यालु बहनों ने लाकर रानी को दिया था। जाकर उसे ले आओ!'' तोता ने आदेश के स्वर में कहा।

राजा सीधा उस जंगल में गया जहाँ रानी बनवास दिये जाने के बाद रह रही थी। वे दोनों वापस दोनों भाइयों और उनकी बहन के घर पर लौटे, जिन्हें यह घटना-परिवर्तन अविश्वसनीय लगा।

भूतों की भेंट

(आधार : के. वमसी कृष्णा, तिरुपति की तेलुगु कहानी)

कंचन कत्याल गाँव का एक किसान था। वह परिश्रमी था। फिर भी अपनी गरीबी के कारण हमेशा चिंतित रहता था। उसकी पत्नी ने शहर जाकर कोई नौकरी खोजने की प्रेरणा दी, क्योंकि वहाँ नौकरी के अवसर बहुत हैं।

उसने पत्नी की सलाह मान ली और शहर के लिए चल पड़ा। वह दोपहर तक चलता रहा। फिर उसने विश्राम करना चाहा। उसने पत्नी की दी हुई भोजन की पोटली खोली। उसमें दो रोटियाँ थीं - एक बड़ी और एक छोटी।

''पहले मैं किसको खाऊँ, बड़ी को या छोटी को? उसने अपने आपसे पूछा, बल्कि जोर से। पेड़ पर रहनेवाली दो भूतनियों ने उसकी आवाज सुन ली। ''क्या वह हम लोगों को खाने जा रहा है?'' बड़ी भूतनी ने डरते हुए कहा। वे नीचे आकर कंचन के पास खड़ी हो गईं।

''कृपया हमें न मारें !'' भूतनियों ने कंचन से प्रार्थना की। वह काफी चतुर था, इसलिए उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि ये भूत बहुत डरपोक हैं। ''यदि मैं तुम्हें छोड़ दूँ तो मुझे क्या मिलेगा?'' उसने पूछा। ''हम तुम्हें एक वरदान देंगी।'' भूतनियों ने कहा।

''इस बॉक्स को रख लो। यदि इसे तीन बार थपथपाओ और पैसा माँगो तो यह पैसा देगा।'' बड़ी भूतनी ने कहा। कंचन फिर शहर की ओर चल पड़ा। शाम हो गई किन्तु शहर अभी भी दूर था।

उसने एक घर देखा। उसमें एक बुढ़िया रहती थी। उसने उसे अपने यहाँ रात गुज़ारने की इज़ाजत दे दी। कंचन ने उसे अपना बॉक्स रखने के लिए दे दिया और कहा, ''इसे तीन बार थपथपा कर इससे पैसे नहीं माँगना।'' लेकिन सुबह उसने ठीक वैसा ही किया। उसने कंचन को वैसा ही दीखनेवाला दूसरा बॉक्स लौटा दिया।

कंचन अब शहर जाने की बजाय घर लौट गया और बॉक्स को तीन बार थपथपाया। लेकिन उससे पैसा नहीं मिला। वह भूतों के पास फिर गया। भूतों ने उसे एक बर्तन दिया और कहा, ''यदि इसे धूप में रखोगे और इससे खाना माँगोगे तो यह खाना देगा।''

लौटते समय कंचन बुढ़िया के घर गया और बर्तन देते हुए कहा, ''इसे धूप में रखकर इससे खाना नहीं माँगना।'' कंचन ने उस पर निगरानी रखी। बुढ़िया ने अनुमान लगाया कि यह जादू का बर्तन है।

सुबह में उसने कंचन को वैसा ही दूसरा बर्तन लौटाया। कंचन भूतों के पास पुनः गया और जो हुआ सब बता दिया। उन्होंने इस बार उसे एक छड़ी दी। ''इससे जमीन पर तीन बार मारो और यह अपने मालिक को पीटने लगेगी।'' भूतों ने बताया।

वह बुढ़िया के घर तीसरी बार भी गया और उसे छड़ी देते हुए कहा, ''इसे जमीन पर तीन बार नहीं मारना।'' कंचन छिपकर औरत को देखने लगा कि क्या होता है।

जब उसने जमीन पर छड़ी से तीन बार मारा, तब छड़ी ने बुढ़िया को पीटना शुरू कर दिया। उसकी चीख सुनकर कंचन बाहर आया और बोला, ''तुम मुझे धोखा देती रही हो। मुझे मेरा बॉक्स और बर्तन वापस कर दो तो यह छड़ी तुम्हें नहीं पीटेगी।''
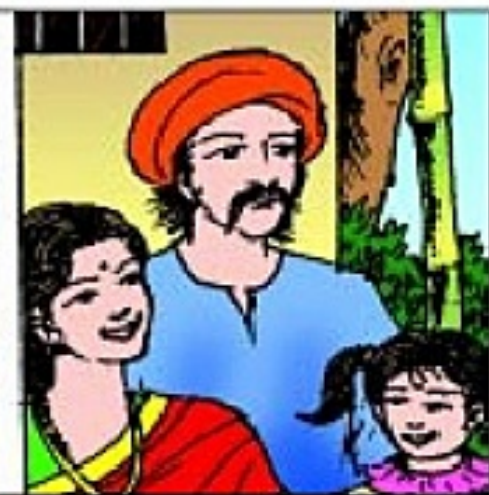
बुढ़िया ने बॉक्स और बर्तन वापस कर दिये। कंचन भूतों की सारी भेंटें लेकर घर वापस लौटा। बॉक्स ने उसे बहुत सारा धन दिया। और बर्तन ने जरूरत के मुताबिक उसे खाना दिया। वे बड़े खुश होकर रहने लगे।

अपने भारत को जानो

१. दिल्ली के लाल क़िले को शाहजहाँ ने बनवाया था। आगरा के लाल क़िले को किसने बनवाया?

२. वे दो सिक्ख गुरु कौन थे जो अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के निर्माण से जुड़े हुए थे?

३. भारत की सबसे बड़ी मस्जिद कौन-सी है? और कहाँ है? इसका निर्माण किसने करवाया?

४. वाइस रिगल हाऊस (अब राष्ट्रपति भवन) एक पहाड़ी पर बनाया गया था। पहाड़ी का नाम बताओ।

५. एक मुगल सम्राट ने अपनी बेगम के लिए मकबरा बनवाया। दूसरे सम्राट के लिए उसकी बेगम ने मकबरा बनवाया। दोनों मकबरों के नाम तथा दोनों सम्राटों और उनकी बेगमों के नाम बताओ।

६. ऊपर भारत के सबसे बड़े गेट वे का चित्र है। यह कहाँ है और इसे किसने बनवाया?

७. हैदराबाद में सर्वविदित स्मारक चारमीनार के पीछे उसका अपना एक इतिहास है - जो एक महामारी से संबंध रखता है। वह संबंध क्या है?

८. मुंबई का 'गेट वे ऑफ इंडिया' और दिल्ली का 'इंडिया गेट' स्मारक हैं। वे किन घटनाओं का स्मरण दिलाते हैं?

९. महाराष्ट्र में अंग्रेज़ों द्वारा राजनैतिक कैदियों को रखने के लिए एक विशाल महल का उपयोग किया गया था। उस महल का नाम तथा स्थान बताओ। वहाँ एक कैदी की मृत्यु हो गई थी। कैदी का नाम क्या था?

१०. अजन्ता और एलोरा गुफाओं का विशेष महत्व क्या है?

(उत्तर अगले महीने में)

दिसंबर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. एम.सी. मेहता
२. राउरकेला
३. होयसाला
४. कार्तिकेय अथवा सुब्रह्मण्या
५. मुखलिसगढ़
६. चोमो
७. क्लोव
८. ग्रन्थ
९. गुरबचन सिंह रंधावा
१०. सी. राजगोपालाचारी

विष्णु पुराण

क्षीर सागर में स्थित त्रिकूट पर्वत पर लोहे, चांदी और सोने की तीन चोटियाँ थीं। उन चोटियों के बीच एक विशाल जंगल था जिसमें फलों से लदे पेड़ भरे थे। उस जंगल में गजेंद्र नामक मत्त हाथी अपनी असंख्य पत्नियों के साथ विहार करते अपनी प्यास बुझाने के लिए एक तालाब के पास पहुँचा।

प्यास बुझाने के बाद गजेंद्र के मन में जल-क्रीड़ाएँ करने की इच्छा हुई। फिर वह अपनी औरतों के साथ तालाब में उतर कर पानी को उछालते हुए अपना मनोरंजन करने लगा। इस बीच एक बहुत बड़े मगरमच्छ ने गजेंद्र के दायें पैर को अपने दाढ़ों से कसकर पकड़ लिया।

इस पर पीड़ा के मारे गजेंद्र धींकार करने लगा। उसकी पत्नियाँ घबड़ा कर तालाब के किनारे पहुँचीं और अपने पति के दुख को देख आँसू बहाने लगीं। उनकी समझ में न आया कि गजेंद्र को मगरमच्छ की पकड़ में से कैसे छुड़ायें?

गजेंद्र भी मगरमच्छ की पकड़ से अपने को बचाने के सारे प्रयत्न करते हुए छटपटाने लगा। गजेंद्र अपने दाँतों से मगरमच्छ पर वार कर देता और मगरमच्छ उछल कर हाथी के शरीर को अपने तेज नाखूनों से खरोंच लेता जिससे खून की धाराएँ निकल आतीं।

हाथी मगरमच्छ की पीठ पर अपनी सूंड चलाता, मगरमच्छ अपनी खुरदरी पूँछ से हाथी पर वार कर देता। अगर हाथी अपने चारों पैरों से मगरमच्छ को कुचलने की कोशिश करता तो वह पानी के तल में जाकर छिप जाता। इस पर हाथी किनारे पर पहुँचने के लिए आगे बढ़ता,
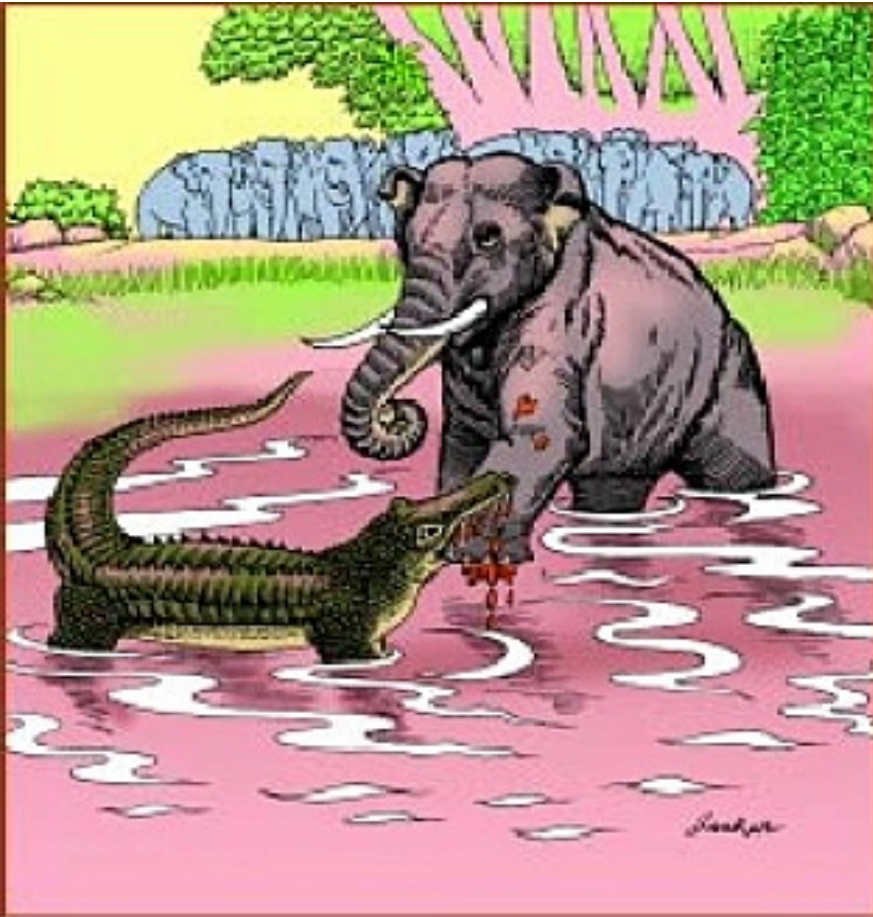
तब झट से मगरमच्छ हाथी को पकड़ कर खींच ले जाता और उसे पानी में डुबो देता। इस तरह मगरमच्छ और हाथी के बीच एक हज़ार साल तक लगातार लड़ाई चलती रही।

गजेंद्र अपनी ताक़त पर विश्वास करके हिम्मत के साथ लड़ता रहा, फिर भी धीरे-धीरे उसकी ताक़त घटती गई। मगरमच्छ तो पानी में जीनेवाला प्राणी है!

पानी के अंदर उसकी ताक़त ज़्यादा होती है! वह हाथी का खून चूसते दिन ब दिन मोटा होता गया। हाथी कमजोर हो गया। अब सिर्फ़ उसका कंकाल मात्र रह गया। मगरमच्छ की पकड़ से अपने को बचा लेना हाथी के लिए मुमकिन न था।

आख़िर गजेंद्र दुखी हो सोचने लगा, "मैं अपनी प्यास बुझाने के लिए यहाँ पर आया। प्यास बुझाने के बाद मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए था! मैं नाहक़ क्यों इस तालाब में उतर पड़ा? मुझे कौन बचायेगा? फिर भी मेरे मन के किसी कोने में यह यक़ीन जमता जा रहा है कि मैं किसी तरह बच जाऊँगा। इसका मतलब है कि मेरी आशा का कोई आधार ज़रूर होगा। उसी को मैं ईश्वर कहकर पुकारता हूँ।"

"देवता, भगवान, ईश्वर नामक भावना का मूल बने हे प्रभु! तुम्हीं सभी कार्य-कलापों के कारण भूत हो!

"मुझ जैसे घमण्डी प्राणी जब तक खतरों में नहीं फँसते, तब तक तुम्हारी याद नहीं करते! दुख न भोगने पर तुम्हारी ज़रूरत का बोध नहीं होता! तुम तब तक उसे दिखाई नहीं देते, जब तक वह यह नहीं मानता कि तुम हो, और उसके मन में यह खलबली नहीं मचती कि तुम हो या नहीं।" इस तरह बराबर सोचनेवाले गजेंद्र को लगा कि मगरमच्छ के द्वारा सतानेवाली पीड़ा कुछ कम होती जा रही है!

गजेंद्र ने जब ध्यान करना शुरू किया, तभी मगरमच्छ के दाढ़ों के मसूड़ों में पीड़ा शुरू हुई। उसका कलेजा काँपने लगा। फिर भी वह रोष में आकर गजेंद्र के पैर को चबाने लगा।

"प्राणियों की बुराई और पीड़ा को तुम हरनेवाले हो! तुम सब जगह फैले हुए हो! देवताओं के मूल रूप हे भगवान! इस दुनिया की सृष्टि के मूलभूत कारण तुम हो। मैं यह विश्वास करता हूँ कि अपनी रक्षा करने के लिए

मैं जितनी तीव्रता के साथ प्रार्थना करता हूँ, तुम उतनी जल्दी मेरी रक्षा कर सकते हो !

"सब प्रकार के रूप धरनेवाले, वाणी और मन से परे रहनेवाले हे ईश्वर ! ऐसे अनाथों की रक्षा करनेवाली जिम्मेदारी तुम्हारी ही है न?

"प्राण शक्तियाँ मेरे भीतर से जवाब दे चुकी हैं ! मेरे आँसू सूख गये हैं? मैं ऊँची आवाज़ में तुम्हें पुकार भी नहीं सकता हूँ ! मैं अपना होश-हवास भी खोता जा रहा हूँ ! चाहे तुम मेरी रक्षा करो या छोड़ दो, यह सब तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। मेरे अंदर सिर्फ़ तुम्हारे ध्यान को छोड़ कोई भावना नहीं है। मुझे बचाने वाला भी तुम्हारे सिवाय कोई नहीं है !" यों गजेंद्र सूंड उठाये आसमान की ओर देखने लगा।

मगरमच्छ को लगा कि उसकी ताक़त जवाब देती जा रही है ! उसका मुँह खुलता जा रहा है। उसका कंठ बंद होता जा रहा है।

उधर हाथी की आँखें इस तरह बंद होने लगीं कि उसे अपने अस्तित्व का ही बोध न था। वह एक दम अचल खड़ा रह गया।

उस हालत में विष्णु आ पहुँचे। सारा आसमान उनके स्वरूप से भर उठा। गजेंद्र को लगा कि वह एक अत्यंत सूक्ष्म कण है।

विष्णु ने अपना चक्र छोड़ दिया और अभय मुद्रा में अपना हाथ फैलाया। बड़ी तेज़ गति के साथ चक्कर काटते विष्णु-चक्र ने आकर मगरमच्छ का सर काट डाला।

दर असल मगरमच्छ एक गंधर्व था। उसका

नाम 'हुहू' था। प्राचीन काल में देवल नामक एक ऋषि पानी में खड़े होकर तपस्या कर रहे थे, तब मगरमच्छ की तरह पानी में छिपते हुए आकर गंधर्व ने उनका पैर पकड़ लिया। इस पर ऋषि ने उसे शाप दे डाला कि तुम मगरमच्छ की तरह इस पानी में पड़े रहो ! अब विष्णु-चक्र के द्वारा उसका शाप जाता रहा।

मगरमच्छ से छुटकारा पानेवाले गजेंद्र को तालाब से बाहर खींचकर विष्णु ने अपनी हथेली से उसके कुँभ-स्थल को स्पर्श किया। उस स्पर्श की वजह से गजेंद्र अपनी खोई हुई ताक़त पाने के साथ पूर्व जन्म का ज्ञान भी प्राप्त कर सका।

गजेंद्र पिछले जन्म में इंद्रद्युम्न नामक एक विष्णुभक्त राजा थे। विष्णु के ध्यान में मग्न उस राजा ने एक बार ऋषि अगस्त्य के आगमन का ख़्याल न किया। ऋषि ने क्रोध में आकर उसे

शाप दिया कि तुम अगले जन्म में मत्त हाथी बनकर पैदा होगे। उसी दिन गजेंद्र के रूप में पैदा होकर उसने मुक्ति प्राप्त की।

गजेंद्र मोक्ष की कहानी नैमिशारण्य में होनेवाले सत्र याग में पधारे हुए शौनक आदि मुनियों को सूत महर्षि ने सुनाई।

मुनियों ने सूत महर्षि से कहा, "मुनिवर, गजेंद्र मोक्ष की कहानी हमें तो सिर्फ़ एक हाथी की जैसी मालूम नहीं होती, बल्कि सारे प्राणि कोटि से संबंधित मालूम होती है। ख़ासकर कई बंधनों और मुसीबतों में फँसकर तड़पनेवाले मानव जीवन से संबंधित लगती है।"

इसके जवाब में सूतमहर्षि बोले, "हाँ, गजेंद्र मोक्ष की कहानी श्लेषार्थ से भरी हुई है। उसका अन्वय जो जिस रूप में चाहे कर सकता है। काल तो विष्णु के अधीन में है। इसलिए काल-चक्र के परिभ्रमण में कई कठिनाइयाँ और समस्याएँ हल होती जाती हैं।"

मुनियों ने पूछा, "मुनिवर, गजेंद्र मोक्ष के आधार पर हमें यह मालूम होता है कि प्रत्येक कार्य का कारणभूत सर्वेश्वर विष्णु हैं। ऐसे महाविष्णु की कहानी पूर्ण रूप से सुनने की इच्छा हमारे मन में जाग रही है। हम आपके सामने बच्चों के समान हैं। इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारी समझ में आने लायक़ सरल शैली में विष्णु कथा की सारी बातें समझा दें। आपने महर्षि व्यास के द्वारा समस्त पुराण, इतिहास और उनके मर्म को भी जान लिया है। इसलिए आप ही वे कहानियाँ सुनाकर हमको कृतार्थ कर सकते हैं।"

मुनियों की बातें सुनकर सूत मुनि ख़ुश हुए और बोले, "हाँ, ज़रूर सुनाऊँगा। महर्षि व्यास ने विष्णु से संबंधित अनेक लीलावतारों की विशेषताओं को महा भागवत के रूप में रचा और अपने पुत्र शुक को सुनाया। विष्णु पुराण सुनकर भव सागर से तरने की इच्छा रखनेवाले महाराजा परीक्षित को शुक महर्षि ने सुनाया। गजेंद्र की रक्षा करने के लिए प्रकट हुए विष्णु का अवतार आदि मूलावतार माना गया।

भगवान विष्णु ने कई अवतार लिए; उनमें विकास की दशाओं के अनुसार दशावतार नाम से प्रसिद्ध दस अवतार ज़्यादा मुख्य हैं।

नार का अर्थ नीर है। विष्णु जल के मूल हैं, इसलिए वे नारायण कहलाये। नारायण से ही

नीर या जल का जन्म हुआ। जल से प्राणी पैदा हुए। विष्णु मछली के रूप में अवतरित हुए; दशावतारों में वही पहला मत्स्यावतार है।

विष्णु जल से भरे नील मेघ के रंग के होते हैं। मेघ के अंदर जैसे बिजली छिपी हुई है, उसी प्रकार विष्णु स्वयं तेजोमय हैं, उनके भीतर से उत्पन्न जल भी तेज से भरे रहकर गोरे रंग का प्रकाश बिखेरता रहता है। वही जल कारणोदक क्षीर सागर है।

क्षीर सागर में अनंत रूपी काल (समय) शेषनाग के रूप में कुंडली मारे लेटा रहता है। शेषनाग के एक हज़ार फण हैं। अनन्त शेषनाग पर शेषशायी के रूप में विष्णु लेटे रहते हैं। उनकी नाभि में से एक लंबे नाल के साथ एक पद्म ऊपर उठा। उसी पद्म से ब्रह्मा का उदय हुआ। ब्रह्मा ने सभी प्राणियों की सृष्टि की।

अनंतकाल युगों के रूप में चलता रहता है। कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग - इन चारों को मिलाकर एक महा युग होता है।

एक हज़ार महायुग मिलकर एक कल्प होता है। एक कल्प ब्रह्मा का एक दिन होता है (रात का वक़्त इसमें शामिल नहीं है) दिन के समाप्त होते ही उन्हें नींद आ जाती है। वही कल्पांत है। उस वक़्त चारों ओर गहरा अंधेरा छा जाता है। विष्णु से निकली संकर्षण की अग्नि सब को जला देती है। झंझावात चलने लगते हैं, तब भयंकर

काले बादल हाथी की सूंडों जैसी जलधाराएँ लगातार गिराने लगती हैं। महासमुद्र में आसमान को छूनेवाला उफान होता है। भू, भुवर और स्वर्ग लोक डूब जाते हैं। चारों तरफ़ जल को छोड़ कुछ दिखाई नहीं देता। यही ब्रह्मा के सोने की रात प्रलयकाल है।

यही कल्पांत का समय है।

सत्यव्रत नामक राजर्षि नदी में नहाकर नारायण का ध्यान करके जब वे अर्घ्य देने को हुए तब उनकी अंजलि में सोने के रंग की एक छोटी मछली आ गई। सत्यव्रत उस मछली को नदी में छोड़ने जा रहे थे, तब वह मछली बोल उठी, ''हे राजन, हमारी मछली की जाति अच्छी नहीं होती, छोटी मछलियों को बड़ी मछलियाँ खा जाती हैं। अगर उनसे बच भी जाये, मछुआरे जाल फेंककर पकड़ लेते हैं। इसलिए मैं आपकी शरण माँगने अंजलि में आ गई हूँ। कृपया से मुझे छोड़ न दीजियेगा।''

सत्यव्रत मछली को अपने कमंडलु में रखकर अपने नगर में ले गये। वे महाराजा के रूप में राज्य करते हुए बड़ी तपस्या करनेवाले एक राजर्षि थे। विष्णु के परम भक्त और बड़े ज्ञानी थे।

कमण्डलु के भीतर वाली छोटी मछली दूसरे दिन तक बड़ी हो गई और छटपटाते आर्तनाद करने लगी, ''महाराज, मुझको कमण्डलु से निकाल कर बड़ी जगह पहुँचा दीजिए।''

इस पर मछली को बड़े नांद में छोड़ दिया गया। वह थोड़ी ही देर में बहुत बड़ी हो गई, तब सत्यव्रत ने उसे एक तालाब में डाल दिया। मछली बराबर बढ़ती गई, तब उसे तालाब से बड़ी नदी में, नदी से समुद्र में पहुँचाया गया।

इस पर मछली ने पूछा, ''हे राजर्षि, मैं आपकी शरण में आया हूँ। ऐसी हालत में क्या आप मुझे समुद्र में छोड़कर चले जायेंगे? क्या मगरमच्छ और तिमिंगल मुझको निगल नहीं जायेंगे?''

सत्यव्रत ने कहा, ''हे महामीन, बताओ, मैं इससे बढ़कर तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ? पल भर में सौ योजन बढ़नेवाले तुमको भला कौन प्राणी निगल सकता है!''

जाड़े की एक रात का आतंक

क्या तुम्हें जानकारी है कि चीनियों ने नव वर्ष समारोह मनाना कैसे आरम्भ किया? जानने के लिए इस कहानी को पढ़ो।

हज़ारों वर्ष पूर्व चीन में एक सुंदर और शान्त नगर था। यहाँ के नागरिक परिश्रमी थे। काम समाप्त कर हर शाम को वे एकत्र होकर विश्राम करते और कहानियाँ सुनाते।

गरमी के दिनों में युवा-वृद्ध सभी सूर्यास्त तक घर से बाहर रहते। यह आमोद-प्रमोद और कूद-फाँद का समय रहता था। किशोर वय के बच्चे खेतों और मैदानों में उछलते-कूदते। छोटे बच्चे अपने दादों की गोद में बैठकर राइम्स सुनाते और गाने गाते।

सरदियों में बहुत ठण्ढ पड़ती थी। अधिकतर लोग घरों के अन्दर रहकर आग तापते रहते थे। वे अपने को गरम रखने के लिए गरम चाय या गरम मदिरा पीते थे।

एक बहुत कड़ाके की ठण्ढ के दिन शहर में एक बहुत ही भयानक घटना हो गई। यह हादसा शहर की एक मात्र सराय में हुआ जो उस दिन भरा हुआ था।

''आह ! यह गरम-गरम चाय कड़ाके की ठण्ढ में कैसे नई जिन्दगी दे देती है। इसके बिना आगे यात्रा करना मेरे लिए कठिन था।'' एक सौदागर ने कहा।

''हाँ, हाँ, मालूम है। बर्फ में बड़ी मुश्किल से मैं सराय तक पहुँच सका।'' दूसरे ने कहा।

एक अध्यापक बीच में टपक पड़ा, ''स्कूल से वापस लौटते समय मेरा पाँव बर्फ में धँस गया। उसे निकालने की कोशिश में मैं और उसके अन्दर चला गया। तभी पास में पड़ा एक लग्गा देखा। उसी की मदद से बच पाया।''

इस प्रकार सराय के गरम माहौल में सब खुशी में अपने-अपने अनुभव एक दूसरे को सुना रहे थे। अचानक एक धमाके की आवाज आई। माजरा क्या है, इसे समझने के पहले ही एक विशाल दैत्याकार जानवर घुस आया और लोगों पर टूट पड़ा तथा लोग उसे ठीक से देख पायें इसके पहले ही उसने सबको मार डाला।

केवल एक छोटा लड़का बच निकला। वह दैत्य को देखकर बेहोश हो गया और कुर्सी से नीचे गिरकर मेज के नीचे लुढ़क गया, जहाँ दैत्य की नजर नहीं गई।

इस घटना से पूरा शहर आतंकित हो गया। अपने अनेक परिजनों की जान चले जाने से लोग बौखला उठे। दैत्य को जिसे सबने 'नियन' नाम दिया, पकड़ने के लिए उन सबने एक खोजी दल बनाया। खोजी दल ने सब जगह दैत्य को खोजा लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

पूरी सरदियों में लोग घर के अन्दर छिपे रहे। शामको गलियाँ वीरान लगती थीं। हर घर के दरवाजे और खिड़कियाँ मजबूती से बन्द कर दिये जाते थे। वसन्त आते ही शहर में फिर जिन्दगी आ गई।

खेतों में पुनः हरियाली छा गई। छोटी-छोटी रंगीन कलियाँ वसन्त के शीतल झोंकों के साथ झूलने लगीं। पशु-कीटाणु सब जगह दिखाई पड़ने लगे।

अब लोग अपने घरों से बाहर निकलने लगे। यह खेतों में बीज बोने का समय था। समय के प्रवाह के साथ लोग दैत्य के बारे में भूल गये और अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गये।

जब हिमपात और बर्फ़ीली झंझा के साथ अगला जाड़ा आया तब एक बार फिर शहर की सराय में लोग गरमाहट और खुशी के लिए इकट्ठे हो गये। लेकिन आह ! शहर में वह आफत फिर आ गया। दैत्य ने आकर फिर सराय में एकत्र सभी लोगों को मारा डाला। एक व्यक्ति फिर बच निकला जिसने बताया कि यह वही राक्षस था जैसा कि पिछले साल लड़के ने बताया था।

शहर क्रोधाग्नि में जलने लगा। "हमें कुछ करना होगा। हम हर साल राक्षस को अपने आदमियों को मारते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकते।" शहर के प्रधान ने कहा। फिर वे सलाह के लिए जादूगरों के पास गये। जादूगरों ने कहा, "तुमने देखा कि दोनों बार नियन ने सरदियों के अंत में आक्रमण किया। अगले वर्ष उसके लिए तैयार रहो।

"राक्षस का मुकाबला करने के लिए तैयारी

कैसे करें?'' एक युवक ने पूछा। ''लाल रंग से दुष्ट शक्तियाँ भागती हैं। लाल झण्डे सभी प्राणियों को भड़काते हैं। धमाके की आवाज से विश्वास टूट जाता है। पटाखों से सभी डरते हैं। अब तुम्हें मालूम हो गया कि कैसे तैयारी करें।'' एक वृद्ध जादूगर ने कहा।

जब अगले वर्ष सरदियाँ आईं तो शहर के लोग नियन का सामना करने के लिए तैयार थे।

शीघ्र ही वह दिन आ गया। वही दिन जब पिछले वर्षों में राक्षस आया था। स्त्रियाँ और बच्चे घरों के अंदर थे। पुरुष बाहर थे। कुछ लोगों के हाथों में तलवारें, पटाखे और मशालें थीं। कुछ के हाथों में बड़े-बड़े ढोल और लकड़ियाँ थीं। कुछ लाल झण्डे और घण्टे लिये थे।

अचानक चकाचौंध करनेवाली रोशनी चमकी। इसके पश्चात रोमांचकारी गर्जन सुनाई पड़ा। नियन आ चुका था। आग के गोलों की तरह जलती आँखों और खून सना हुआ विशाल मुख वाला भयानक राक्षस मानों आसमान से टपक पड़ा। इसके बड़े-बड़े पंजे और टेढ़े नाखून थे। पीठ पर दो बड़े-बड़े पंख थे। तलवार लिये कुछ आदमियों के एक झुण्ड पर वह टूट पड़ा।

लेकिन वह कुछ कर पाता इसके पहले ही सैकड़ों लोगों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। वे घण्टे और ढोल बजाने लगे और बड़े-बड़े लाल झण्डे फहराने लगे। उन सब ने उस पर पटाखे जला कर फेंके। अब नियन डर गया। वह भय से गरजने लगा। बड़े-बड़े लाल झण्डों ने उसे अन्धा बना दिया। पटाखों, ढोलों तथा घण्टे-घड़ियालों की आवाज ने उसके शरीर को झकझोर दिया। वह भाग गया।

लोगों में खुशियों की लहर फैल गई। ''नियन भाग गया। अब फिर आने की हिम्मत नहीं करेगा। यह एक नये युग की शुरुआत है। हम लोग आज उत्सव मनायें।'' प्रधान ने घोषणा की।

यह चीनियों का पहला नया साल था। उन्होंने भय से मुक्ति के इस दिवस को बड़े उत्साह से मनाया। वे एक दूसरे के घरों में जाकर मिले। उन्हें उपहार दिया, मनोरंजन के लिए नाटक खेले तथा स्वादिष्ट भोज का आनन्द लिया।

बिना ब्याज के कर्ज़

लक्ष्मी शिवरामपुर एक छोटा-सा गाँव है, पर प्रसिद्ध पुण्यक्षेत्र है। गाँव के प्रारंभ में लक्ष्मी देवी का मंदिर है। गाँव के मध्य शिव का मंदिर है और अंत में राम मंदिर है। इसलिए साल भर वहाँ उत्सव होते रहते हैं, मेले लगते हैं। गाँव के चारों ओर सुंदर पहाड़ व प्रपात हैं, इसलिए शिवरामपुर विहार-स्थल के रूप में भी प्रसिद्ध है।

शरभ उसी गाँव का निवासी है। गाँव के बीच में उसकी कपड़ों की अपनी दुकान है। पर उसे यह चिंता खाये जा रही है कि उसका अपना एक घर नहीं हैं। कितने ही ऐसे छोटे-छोटे व्यापारी उसी गाँव में हैं, जिनके अपने बड़े-बड़े घर हैं। पर उसका अपना खपरैलों का घर भी नहीं है।

एक दिन शरभ की पत्नी पार्वती ने उससे कहा, ''शिवालय के पुजारी की पत्नी ने दो-तीन बार मुझसे कहा कि गाँव के बाहर घर बनाने की जमीन बेची जा रही है। हम भी वहाँ एक जगह खरीद लेते तो अच्छा होता।''

अपने ही मन की इच्छा को पत्नी के मुँह से सुनकर शरभ बेहद खुश हुआ। अब तक उसने जो रक़म बचायी थी और ससुराल ने शादी के समय जो अंगूठी दी थी, उसे बेचने पर जो रक़म मिली, उससे उसने छोटी-सी ज़मीन खरीद ली।

''जब जगह खरीद ली है, तो किराये के घर में क्यों रहें? छोटा-सा घर ही सही, नहीं बनावायेंगे तो नुक़सान हमीं को होगा न?'' पार्वती हर दिन कम से कम एक बार याद दिलाने लगी।

शरभ को भी पत्नी की कही बात सही लगी। उसने पत्नी के गहने बेच दिये, दोस्तों से कर्ज़ लिया और घर बनवाने का काम शुरू कर दिया। शुरू में उसने सोचा कि एक बरामदेवाला और

- चमन शाह -

छोटा-सा घर काफ़ी होगा।'' शरभ को पत्नी की यह बात भी सही लगी।

घर बनवाने के लिए दस हज़ार और रुपयों की ज़रूरत पड़ी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था तो उसकी पत्नी पार्वती ने सलाह दी ''हरिकृष्णापुर में दशरथ नामक हमारे एक रिश्तेदार हैं। रिश्ते में वे बड़े भाई लगते हैं। ज़मींदार के दीवान में अच्छी नौकरी की और खूब कमाया भी। मैं खुद चली जाऊँगी और उनसे कर्ज़ माँगूंगी तो वे 'न' नहीं कहेंगे। किश्तों में धीरे-धीरे उनका कर्ज़ चुका देंगे। कल ही हम दोनों उनसे मिलने निकलेंगे।''

पति-पत्नी सबेरे ही निकल पड़े और दुपहर तक दशरथ के घर पहुँच गये। कुशल मंगल जानने के बाद दशरथ ने पार्वती से पूछा, ''क्यों पार्वती, सुना है कि घर बनवा रही हो। क्या पूरा हो गया? मुझसे कहती तो कितना खुश होता।''

''बुरा मत मानिये, भाई साहब। सबको निमंत्रित करना चाहा, पर लगता है, इस भाग्य से हम वंचित हैं।'' पार्वती ने दीन स्वर में कहा।

''बात क्या है? ऐसा क्या हो गया बहन,'' दशरथ ने आतुरता भरे स्वर में पूछा।

''घर का काम पूरा करने के लिए कम से कम दस हज़ार रुपये और चाहिए। इसी सिलसिले में हम आपके पास आये हैं। दस हज़ार रुपये कर्ज़ में देंगे तो किश्तों में हम उसे चुका देंगे। यह मदद आप ही कर सकते हैं,'' पार्वती ने कहा।

''बड़ा भाई ठहरा। क्या इतनी भी मदद मैं

नहीं कर सकता? पहले भोजन कर लीजिए,'' दशरथ ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा।

भोजन कर चुकने के बाद दशरथ ने दस हज़ार रुपये शरभ के हाथ में रखे और कहा, ''अपनी सुविधा के अनुसार यह रक़म लौटाइये। कोई जल्दी नहीं।''

शरभ ने रुपये अपनी थैली में डालते हुए कहा, ''ब्याज के बारे में भी बता देंगे तो,'' उसकी बात पूरी हो, इसके पहले ही दशरथ ने कहा, ''क्या कह रहे हैं आप! मैं थोड़े ही आपसे ब्याज लूँगा। आख़िर पार्वती मेरी बहन जैसी है। यह तो केवल हथ उधार है।''

''हम हमेशा आपके कृतज्ञ रहेंगे।'' कहकर पति-पत्नी दोनों निकल पड़े। जैसे ही वे वहाँ से चले गये, दशरथ की पत्नी ने ताना मारते हुए कहा, ''मानती हूँ, वे आपके रिश्तेदार हैं। पर

इसका यह मतलब नहीं कि बिना ब्याज के उन्हें आप कर्ज़ दे दें। हमारे भी बच्चे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी हम पर है। आप अपनी जिम्मेदारी कैसे भुला सकते हैं?''

दशरथ ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। वह चुप ही रह गया। दो महीनों में शरभ का घर बन गया। गृहप्रवेश के अवसर पर दशरथ अपनी पत्नी और बच्चे समेत आया। शरभ दंपति ने बड़े ही प्यार से उनका स्वागत किया। वहाँ वे दो दिनों तक आराम से रहे।

तीसरे दिन शाम को जब दशरथ घर के बाहर खाट पर बैठा हुआ था, तब बग़ल में ही खड़ी अपनी पत्नी से कहा, 'घर छोड़े तीन दिन हो गये, कल निकलेंगे।''

''एक हफ़्ते के अंदर यहाँ शिवरात्रि उत्सव बड़े वैभव से मनाये जायेंगे। हफ़्ते भर यहीं ठहरकर उत्सव में भाग लेकर जायेंगे।'' पत्नी ने कहा।

''तो हफ़्ते भर यहीं रह जाएँ? इतने दिनों तक हमारे यहाँ रहने से उन्हें तक़लीफ़ नहीं होगी?'' दशरथ ने कहा।

''इसमें तक़लीफ़ की क्या बात है? हथ उधार के रूप में आपने दस हज़ार रुपये जो दे रखे हैं। उसका ब्याज गिन लीजियेगा तो आप ही को मालूम होगा कि वह कितनी बड़ी रक़म होती है। उसकी तुलना में हम पर होनेवाला खर्च बिलकुल नहीं के बारबर है।'' पार्वती ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

''ज़ोर से मत बोलो। कोई सुन लेगा। शरभ मेहनती है, ईमानदार है। हमारा धन अवश्य लौटायेगा।'' दशरथ ने दबी आवाज़ में कहा।

''आज के ज़माने में क्या कोई ब्याज के बिना कर्ज़ देता है? आपने तो एक भी पैसे का ब्याज लिये बिना दस हज़ार रुपये दे दिये। मुझे तो चिंता इस बात की लगी हुई है कि ये रुपये वे कब लौटायेंगे और आप हैं, जो इस बारे में सोचने का भी नाम नहीं ले रहे हैं,'' पार्वती ने रूखे स्वर में कहा।

बरामदे में आयी पार्वती ने उनकी ये बातें सुन लीं। उनसे मिले बिना वह चुपके से घर के अंदर चली गयी।

उस रात को भोजन कर चुकने के बाद हाथ धोते हुए दशरथ ने पार्वती से कहा, ''कल हम निकल रहे हैं।''

''एक हफ़्ते में यहाँ शिवरात्रि उत्सव मनाये

जायेंगे। आप सब रह जाइये और उत्सव देखकर जाइयेगा।'' पार्वती ने कहा।

''नहीं बहन, बहुत काम हैं। हमें जाना ही पड़ेगा।'' दशरथ ने कहा। ''अगर इतना ज़रूरी काम है तो भाभी और बच्चों को यहीं छोड़कर आप जाइयेगा। उत्सव देख कर वे आ जायेंगे।'' पार्वती ने कहा।

''नहीं, नहीं, इससे आपको असुविधा होगी।'' दशरथ ने कहा।

''इसमें असुविधा की क्या बात है, भाई साहब। हम यह घर बनवा पाये, आप ही की मदद से। इस ज़माने में बिना ब्याज के क्या कोई कर्ज़ देता है? और आपने एक पाई भी ब्याज में न लेकर दस हज़ार रुपयों की बड़ी रक़म दी। ब्याज गिन लें तो क्या आप जानते हैं, कुल मिलाकर कितनी बड़ी रक़म होगी? मानती हूँ कि यह रक़म आपके लिए कोई बड़ी रक़म नहीं है। आप जो खर्च करते हैं, उसकी तुलना में इस रक़म का कोई महत्व ही नहीं।'' पार्वती ने कहा।

उसकी इन बातों को सुनकर दशरथ और उसकी पत्नी ने एक-दूसरे का मुँह देखा। पति का फीका मुख उससे देखा नहीं गया और उसने अपना सिर पलट लिया।

''भाई साहब, ऐन मौक़े पर आपने हमारी मदद की, नहीं तो हम यह घर बनवा नहीं पाते। आज आप ब्याज लेने से इनकार कर रहे हैं और हम भी आप पर ज़ोर डालना नहीं चाहते। इसीलिए हम चुप हैं। पर विश्वास कीजियेगा, छः महीनों के अंदर ब्याज सहित आपका कर्ज़ चुका देंगे। तब तक कृपया इंतज़ार कीजिए।'' पार्वती ने कहा।

''ठीक है, जब देना चाहती हो, तो दे देना। जल्दी भी क्या है?'' कहते हुए दशरथ ने एक और बार अपनी पत्नी को देखा। वह शर्म के मारे सिर झुकाये खड़ी थी।

स्थिति की गंभीरता को भाँप कर पार्वती ने फिर बड़े स्नेह से कहा, ''भाई साहब, भाभी और बच्चे तो उत्सव देखकर ही जायेंगे। आप भी उत्सव के दिन आ जाइयेगा और अगले दिन सबको लेकर चले जाइयेगा।''

एक गाँव में मंगल नामक एक कुशल तैराक था। एक जमीन्दार ने उसकी तैरने की कला पर खुश होकर उसे कांसे की एक मूर्ति भेंट की। वह मूर्ति विलायत से आई थी। और बहुत मूल्यवान थी।

एक बार मंगल राजधानी में वसंतोत्सव देखने गया। उसने सोचा कि अपनी क़ीमती मूर्ति को घर पर छोड़ जाना उचित नहीं है। इसलिए उसने सेठ मूलचन्द से उसके लौटने तक मूर्ति को सुरक्षित रखने का निवेदन किया।

ऐसी सुंदर मूर्ति एक गरीब के घर की अपेक्षा उसके घर में ज़्यादा सुशोभित होगी। यों विचार कर उसने पूछा, ''मंगल, इसे मेरे हाथ बेच दोगे?''

''सेठ साहब ! यह बेचने की चीज़ नहीं है क्योंकि यह मेरी काल की पहचान है।'' मंगल ने जवाब दिया।

मूलचन्द ने मन में सोचा, ''ओह ! इसे इतना घमण्ड !'' यों सोचकर उसने निश्चय किया कि यह मूर्ति मंगल को लौटानी नहीं है। उसने उसी प्रकार की मिट्टी की एक मूर्ति तैयार कराई और उस पर पीतल का मुलम्मा चढ़वा दिया। मंगल के लौटने पर उसे वही दे दिया।

घर जाकर उसे मूलचन्द के दगे का पता चल गया, क्योंकि मूर्ति के आले में रखते वक़्त कांसे की आवाज़ नहीं निकली। मूर्ति के घिसने पर मिट्टी भी निकल आई।

उसी वक़्त मंगल मूलचन्द के घर आकर बोला, ''सेठजी! आपने मेरी असली मूर्ति छिपाकर मिट्टी की यह मूर्ति मुझे दे दी! कृपया मेरी मूर्ति लौटा दीजिए।''

''मंगल ! तुमने जो मूर्ति दी थी, मैंने वही तुम्हें लौटा दी। शायद मेरे कुएँ के पानी से धोने पर तुम्हारा कांसा मिट्टी के रूप में बदल गया हो! यह तो पानी का प्रभाव है। हम कर ही क्या सकते हैं?'' मूलचन्द ने कहा।

२५ वर्ष पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

मंगल लाचार हो घर लौट आया। मगर उसने सेठ को सबक सिखाने का निश्चय किया।

एक दिन मूलचन्द की पत्नी से उबहन टूटकर पीतल का कलश कुएँ में जा गिरा। कुआँ काफी गहरा था। सारे गाँव के लिए वही एक पीने के जल का कुआँ था। उस कुएँ में उतरकर सिर्फ़ मंगल ही कलश निकाल सकता था। इसलिए मूलचन्द ने मंगल से कलश निकालने का अनुरोध किया।

''सेठजी ! यह कौन-सी बड़ी बात है? कल सुबह तक ज़रूर आपका कलश कुएँ से निकालकर दे दूँगा।'' मंगल ने कहा।

उसी दिन आधी रात को मंगल मिट्टी का एक घड़ा लेकर कुएँ पर पहुँचा। कुएँ में उतरकर उसने कांसे का कलश निकाला, उसके उबहन को मिट्टी के घड़े से बांधा। और कुएँ में छोड़कर कांसे के कलश को एक गुप्त स्नान में छिपा दिया। फिर वह घर जाकर सो गया।

दूसरे दिन सेठ को साथ ले मंगल कुएँ के पास पहुँचा, कुएँ में डुबकी लगाई और मिट्टी का एक घड़ा ऊपर ले आया। उसे देख सेठ का चेहरा पीला पड़ गया। वह घबरा कर बोला, ''मंगल ! यह घड़ा हमारा नहीं, किसी और का होगा ! तुम एक बार और डुबकी लगाकर देखो।''

मंगल ने पानी में डुबकी लगाई, बड़ी देर बाद ऊपर आकर बोला, ''सेठजी ! इस घड़े को छोड़ कोई दूसरा घड़ा नहीं है। शायद पानी के प्रभाव से आपका कांसे का कलश मिट्टी का घड़ा बन गया हो !'' यों कहकर मंगल अपना घर चला गया।

इसके बाद सेठ मूलचन्द ने दो-चार लोगों से कुएँ का सारा जल निकलवाया। पर उसका कलश न मिला।

सेठ सब-कुछ समझ गया और रात को चुपके से मंगल के घर जाकर उसे कांसे की मूर्ति वापस कर दी और अपने पीतल का कलश ले आया।
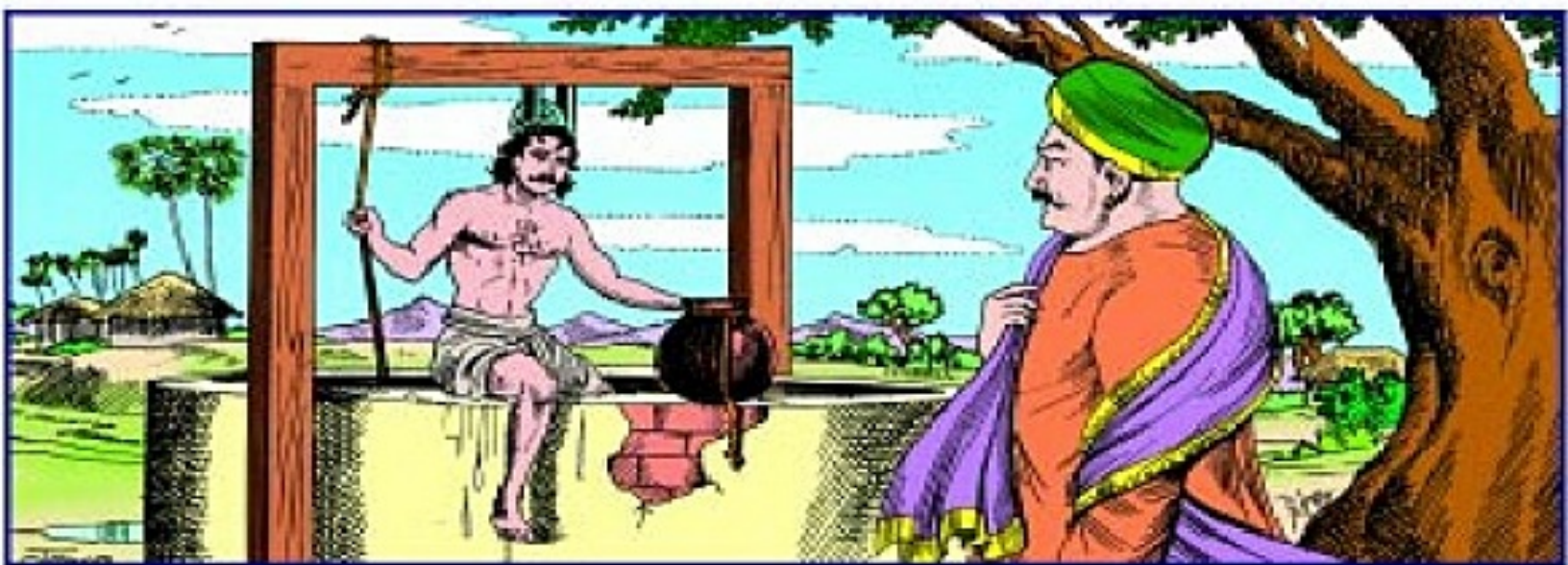
मानवेन्द्र के दरबार का बहिष्कार करने के एक दिन बाद वीर सिंह महल के उद्यान में चहलकदमी करता है। वह चिंतित है।

मैं यहाँ कोतवाल हूँ, सर।

क्या बात है?

मंत्री का कहीं पता नहीं है!

हमारे आदमी मारे गये।

वह युवक कौन था जो मेरे राजा होने पर आपत्ति कर रहा था?

वह वसन्त है। वह कहता है कि वह कुछ नहीं जानता।

उसे गलियों में घुमाओ और सबके सामने फाँसी दे दो।

ताकि षडयंत्रकारियों को पता चले कि हमलोग सख्ती बरत सकते हैं।

जी, सर।

वसन्त की फाँसी की घोषणा की जाती है। दूसरे दिन सवेरे का जुलूस कोहरे में डूब जाता है। कोतवाल, वीर सिंह और नया सेनापति अमर सिंह कोहरे के कारण किसी को दिखाई नहीं दे रहे हैं।

अचानक एक घोड़ा तेजी से दौड़ता हुआ आता है। घुड़सवार का चेहरा ढका हुआ है।

मार्ग से हट जाओ।

कोतवाल के घोड़े से टक्कर हो जाती है। वह गिर जाता है।

रहस्यमय घुड़सवार वसन्त के निकट जाता है। और उसे उठाकर...
...अपने घोड़े पर बिठाता है।
और घोड़े को उड़ाता हुआ क्षण भर में अदृश्य हो जाता है।
भीड़ के लोग मजाक उड़ाते हैं। वीर सिंह कोतवाल को मुश्किल से उठते हुए देखता है।
कैदी कहाँ है?
एक नकाबपोश उसे उठा ले गया।

अमर सिंह ! कोतवाल को जेल भेज दो।
सर, मेहरबानी ! सब अचानक हो गया।
तुम इसे ले जाओ।
नकाबपोश घुड़सवार जंगल की ओर बढ़ता है।
और एक गुफा के सामने रुकता है।
शान्तिदेव के बारे में तुम क्यों चिंतित हो?
सर, वे एक अच्छे इन्सान हैं।
और बीर सिंह?
वह अत्याचारी है।
तब... तुम अमृतपुरी जाओ और काली मंदिर पर प्रतीक्षा करो।
वसन्त आश्चर्य में है कि उसे बचानेवाला कौन है?
महल में लौटकर वीर सिंह सहायक कोतवाल को बुलाता है।
आज से तुम कोतवाल हो। नकाबपोश को पकड़कर लाओ।
यदि वह प्रतिरोध करे तो उसे जान से मार भी सकते हो।
मैं उसे शीघ्र ही पकड़कर आपके सामने हाजिर करूँगा।
क्रमशः

आपके पन्ने आपके पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

इन्डियम

इन्डियम एक मुलायम, तन्य, चाँदी के समान चमकीला धातु तत्व है। इसका प्रतीक 'इन' है। इसकी तत्व संख्या ४९ है। इसका आण्विक वजन ११४.८२ है। एफ. राइक तथा एच. रिशर ने सन् १८६३ में कच्चे जस्ते के मिश्रण में इसका आविष्कार किया। यह चाँदी के समान बहुत दुर्लभ है। यह खनिज पदार्थों में जस्ता, लोहा तथा कच्चे सीसे के साथ पाया जाता है। इस तत्व को नील (इनडिगो) नाम दिया गया, जो इसके बर्णक्रम में सबसे चमकीली रेखा का रंग है।

इन्डियम ताप के बिस्तृत क्षेत्र तक तरल स्थिति में रह सकता है। यह चाँदी से अधिक क्षय-अवरोधी है। दर्पण की सतह बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। यह चाँदी के समान ही प्रतिबिम्बित होता है। इन्डियम में कमरे के ताप में जंग नहीं लगता। लेकिन गलनांक से अधिक ताप पर यह बैंगनी ज्योति के साथ जलता है। इससे बने ऑक्साइड का प्रयोग ग्लास बनाने में किया जाता है। इसका उपयोग पीला रंग देने में किया जाता है।

इन्डियम का उपयोग बेयरिंग में कोटिंग्स देने में होता है। इन्डियम ऐसिड और खरोंच को रोकता है। इन्डियम के मिश्रण ट्रांजिस्टर्स तथा सौर उपकरणों में प्रयुक्त किये जाते हैं।

तुम्हारा पर्यावरण

रेल-रद्दी को 'ना, ना' बोलो

तुम्हें कैसा लगेगा यदि तुम्हारा घर रेलबे लाइन के पास हो और हर रोज तुम्हें गुजरती हुई रेलगाड़ियों से फेंके हुए कचरों की भरमार की मार सहनी पड़े। क्या तुम्हें झुंझलाहट नहीं होगी?

लेकिन रेलगाड़ी से यात्रा करते समय हम लोगों में से लाखों लोग ठीक यही कर रहे हैं!

रेलबे लाइन के किनारे कचरा और कूड़ों का (प्लास्टिक कप, प्लेट, पानी की प्लास्टिक बोतलें, केलों, अण्डों के छिलके आदि) मानों एक कारवां हो और शायद ही रेल किनारे के गाँव या नगर निबासियों की असुबिधा के बारे में कोई सोचता हो।

यहाँ कुछ चीज़ें हैं जिन्हें एक अधिक जिम्मेदार यात्री बनने के लिए शायद आप कर सकें :

- अपना कप या गिलास साथ लेकर चलिये ताके आप चाय-कॉफी के साथ प्लास्टिक कप मना कर सकें।
- पानी के लिए अपनी बोतल साथ रखें ताके हमेशा पानी की बोतल खरीदनी न पड़े।

आपके पन्ने आपके पन्ने

क्या तुम्हें मालूम था?

गुलाब की उपयोगिताएँ

अतिप्राचीन काल से कवियों, लेखकों तथा प्रेमियों ने फूलों की रानी गुलाब को प्रेम के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। इसके अन्य अर्थ भी लगाये जाते हैं।

अनेक यूरोपवासी गुलाब को कभी गोपनीयता का प्रतीक मानते थे। इंग्लैण्ड में नौकर लोग अपने कानों के पीछे गुलाब इसलिए पहनते थे कि कभी कुछ संयोग से वे सुन लें तो दुबारा न सुनना पड़े। जर्मनी में खाने के कक्ष में गुलाब का एक कटोरा इस बात का संकेत था कि अतिथि स्वतंत्र रूप से बोल सकते हैं। गुलाब की कली की बन्द पंखुड़ियाँ शायद रहस्यमयता का संकेत देती थीं।

मिस्रवासी फेरो पाँच हजार साल पहले गुलाब की खेती किया करते थे और उनमें से बहुत लोग मरने के बाद अपने शरीर के साथ गुलाब भी दफन कराते थे।

प्राचीन रोमवासी गुलाब से मदिरा बनाते थे। गुलाब का अर्क आइसक्रीम में खुशबू डालने में प्रयोग में आता था। और सलाद के साथ वास्तव में इसे खाते भी थे। शताब्दियों से गुलाब जल और गुलाब का तेल चिकित्सा के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा है। आजकल गुलाब का तेल सौंदर्य प्रसाधनों में, इत्रों में तथा शरबत में खुशबू डालने के काम में प्रयुक्त किया जाता है।

अपना बौद्धिक स्तर बढ़ाओ

इस प्रश्नोत्तरी का विषय है – प्रकृति

१. टेडी बेयर बच्चों की प्रिय गुड़िया है। किस पशु के नमूने पर यह बना है?

२. पृथ्वी पर पहले क्या जन्मा–वृक्ष या घास?

३. ग्रास हॉपर्स के कान कहाँ पर होते हैं?

४. क्या सभी गिद्ध एक ही समय में मुर्दे को खाते हैं?

५. सर्पमीन तथा मेंढक में क्या समानता है?

(प्रश्नोत्तर पृष्ठ ६६ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

SOURAA

SOURAA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

नवम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

अमित उत्तमराव चौधरी,
द्वारा, सौ. ज्योति चौधरी
प्रधान डाक घर,
औरंगाबाद, महाराष्ट्र - ४३१ ००१.

विजयी प्रविष्टि

चल, चल रे मेरे हाथी।
कोई नहीं है मेरा साथी॥

'अपना बौद्धिक स्तर बढ़ाओ' के उत्तर

१. अमेरिका के राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट के हाथ कभी एक काले भालू का बच्चा आ गया था।
२. घासों के पूर्व वृक्ष के समान पौधे पृथ्वी पर प्रकट हुए थे।
३. कर्णपटही झिल्ली उनके आगे के पैरों के खोखलों में रहती है। वे आगे के पैरों को हिला कर आवाज के स्रोत का पता लगा सकते हैं।
४. इनमें एक 'पेकिंग आर्डर' के अनुसार प्रबल पक्षी पहले खा लेते हैं और दुर्बल अपनी बारी के लिए इंतज़ार करते हैं।
५. सर्पमीन मेंढक के समान चमड़े से सांस लेता है।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Amul
FUNDOO
खाओ
पांडव
घर लाओ!
ऑफ़र
FUNDOO
स्टेप-1
अमूल फंडू खरीदो
और
पांडव स्टिकर्स मुफ्त पाओ.
स्टेप-2
महाभारत
पाँचों पांडव और द्रौपदी स्टिकर का
सेट जमा करो और बदले में पाओ
5 महाभारत डायमंड
कॉमिक्स.
बंपर प्राइज़
महा भारत दर्शन
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड.आणंद-388 001. हमें यहां मिलें : www.amul.com
*शर्तें लागू.
FCB•ULKA 310642 HIN